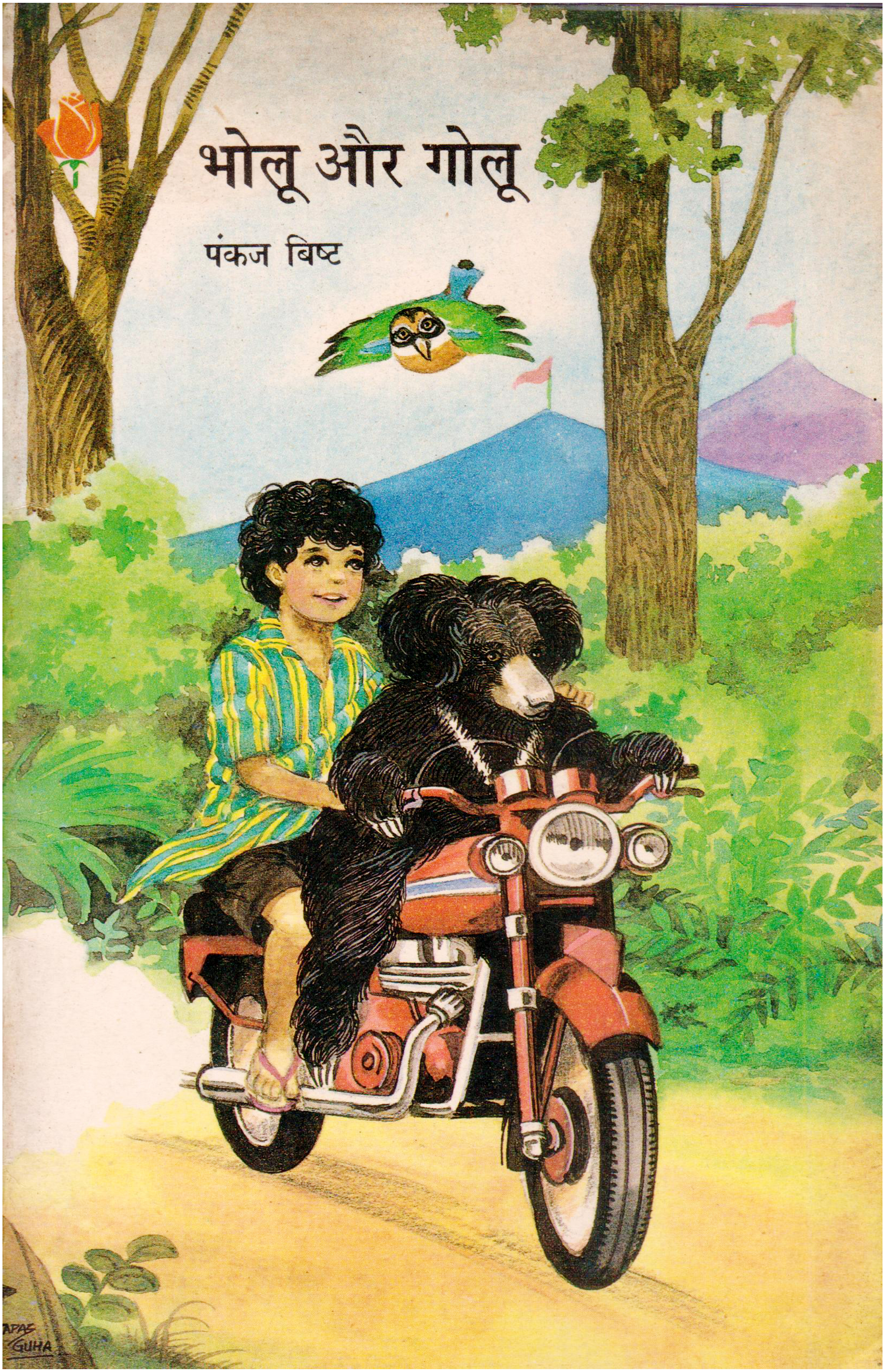
भोलू और गोलू

पंकज बिष्ट



भोलू और गोलू

पंकज बिष्ट

चित्रांकन

तापस गुहा



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

स्वाति, उत्तरा और वारिधि के लिए

— पंकज बिष्ट

ISBN 81-237-0936-6
पहला संस्करण : 1994 *(शक 1916)*

Bholu Aur Golu *(Hindi)*
रु. 12.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,
ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

विषय सूची

यह भी कोई जिंदगी है

यह छोटे भालू की कहानी है। सदा उदास रहनेवाले भालू की। वह सर्कस में काम करता था। उसका कोई दोस्त नहीं था। न ही वह किसी के साथ खेल पाता था। वह दोस्ती करता भी तो किससे ? सर्कस जगह जगह घूमता रहता। एकाध महीने से ज्यादा कहीं नहीं रुकता था। जब किसी शहर में उनका तमाशा खत्म हो जाता तो छोटे भालू को बड़ी खुशी होती। तब उसे एक पिंजरे में बंद कर दिया जाता था, पर वह बुरा नहीं मानता था। हाथियों, घोड़ों, बकरियों, शेरों आदि के साथ उसे भी रेल के डिब्बे में लाद दिया जाता।

वे छोटे भालू के आनंद के दिन होते। इंजन सीटी मारता। पूरी सांस खींचकर जोर लगाता और हड़बड़ाकर डिब्बे चल पड़ते। पिंजरे एक दूसरे से टकराकर बज उठते। कभी कभी वह डर जाता। कहीं वह गिर तो नहीं जायेगा ? रेल चलने लगती। ठंडी ठंडी हवा लगती। डर धीरे धीरे खत्म हो जाता। घर-मकान, आदमी-जानवर, शहर-कस्बे--एक के बाद एक पीछे को भागने लगते। उसे बड़ा मजा आता। वह अपने पिंजरे से चारों ओर देखता जाता। नदी-नाले, पेड़-पहाड़ देखना उसे विशेषकर अच्छा लगता। पर उसे घर की याद भी आने लगती। उसका घर भी ऐसे ही कहीं पहाड़ों के बीच था। वहां कई नदी-नाले थे, पेड़-पौधे थे। वह रोने लगता और तब चुप होता जब रेल उसे लेकर उन पेड़ों-पहाड़ों से दूर निकल जाती।

यात्रा का खत्म होना उसे अच्छा नहीं लगता था। उतरते ही उसकी नाक में नकेल डाल दी जाती। मुंह पर पट्टा बांध दिया जाता। सर्कस के अहाते के एक कोने में उसका खूंटा रहता था। अधिकांश समय उसे वहीं बंधा पड़ा

रहना पड़ता था। सर्कस के विशाल तंबू, जानवरों के बदरंग पिंजरे और टीन की चादरों की चारदीवारी के अलावा, कोई नयी चीज नजर नहीं आती थी। यह भी कोई जिंदगी है– वह सोचा करता। न खेलना, न कूदना, हर समय बंधे पड़े रहो। यों उसकी उदासी बढ़ जाया करती। तब वह कई कई दिनों तक गुमसुम पड़ा रहता। न किसी से बोलता, न खेलता। यहां तक कि उसे खाना भी अच्छा नहीं लगता था।

सारे जानवर उसके बारे में जानते थे। वे उसे समझाते, "देखो भोलू, उदास रहने से क्या होगा। रहना तुम्हें यहीं है। पिछली बातों को भूल जाओ। अब तुम वहां नहीं जा सकते। खाना-पीना खाओ और मस्ती से पड़े रहो।"

पर यह जीवन छोटे भालू को स्वीकार नहीं था। वह बंदी था और डंडे के इशारे पर उसे नाचना पड़ता था। कभी उसे जोकरों के साथ फुटबाल खेलनी पड़ती, कभी नकली कुश्ती करनी पड़ती। जरा सी भी गलती पर उसकी चाबुक से पिटाई होती। कभी सबके सामने और कभी बाद में। शुरू में वह बिगड़ता



था। तब उसे और जोर की मार पड़ती थी। अब वह चुपचाप पिट लेता है और चुपचाप रो लेता है।

हां, मोटरसाइकिल चलाने में उसे बड़ा आनंद आता है। जब वह मोटरसाइकिल पर बैठा होता है, उसका दिल हिलोरें लेने लगता है। मोटरसाइकिल की फट फट उसे किसी मीठे गाने की आवाज की तरह लगती है।

मोटरसाइकिल चलाना उसे यों ही नहीं आ गया। इसके लिए उसने बड़ी मार खायी है। शुरू में सर्कस के गोल मैदान में चक्कर काटते हुए वह कदम कदम पर गिर जाया करता था। अब भी वह मोटरसाइकिल स्टार्ट करना नहीं सीख पाया है। पर जब इंजन चल पड़ता है तो वह पूरे विश्वास से भगा लेता है। वह सोचा करता है, कितना अच्छा होता अगर वह मोटरसाइकिल को तंबू से बाहर ले जा सकता-- खुले आकाश के नीचे, नदी-नालों के बीच से होता हुआ पहाड़ों की ओर। वह रेलों से दौड़ लगाने की सोचता।

जब वे एक शहर से दूसरे शहर जा रहे होते हैं, वह सोचने लगता है। कितना अच्छा होता यदि रिंगमास्टर इजाजत देता तो वह रेलगाड़ी के साथ साथ मोटरसाइकिल पर चल सकता। तब कितना मजा आता। वह रेलगाड़ी में लदे जानवरों को हाथ हिला हिला कर टा-टा करता। जानवर उसे देख देख कर तालियां बजाते। जब वह मोटरसाइकिल चलाता है बाकी जानवर उसे चकित देखते रह जाते हैं। उनमें से कोई मोटरसाइकिल चलाना नहीं जानता। पर ये सब ख्याल हैं। ऐसे सपने छोटा भालू अकसर देखता रहता है। छोटे भालू को कई बार लगता है कि अगर रिंगमास्टर उसे नयी मोटरसाइकिल ले दे तो वह उसे स्टार्ट भी कर लेगा। वैसी ही जैसी रिंगमास्टर की अपनी मोटरसाइकिल है। पर रिंगमास्टर बहुत निर्दयी है। सारे जानवर उससे थर थर कांपते हैं। इसलिए भालू की उससे कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं होती।

भोलू को था गुस्सा आया

उस दिन भी छोटा भालू रस्सी से बंधा, अपने पिंजड़े के बाहर, उदास लेटा हुआ था। बगल ही में हाथियों का बाड़ा था। अचानक उसकी नजर एक लड़के पर पड़ी।

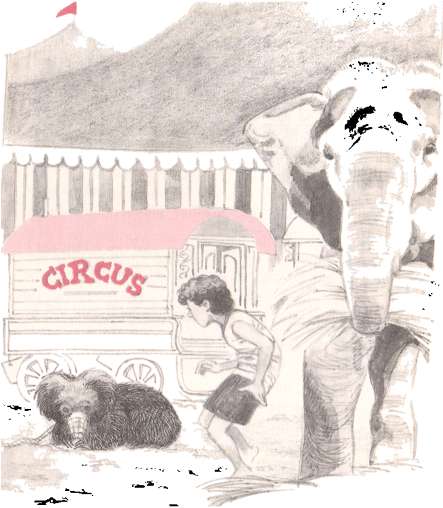
दस-बारह साल का लड़का निधड़क हाथियों को अपने हाथ से हरा चारा खिला रहा था। हाथी बीच बीच में उसे अपनी सूंड से प्यार कर रहे थे।

यह लड़का कौन है ? भालू ने सोचा। वह लड़के को पहली बार देख रहा था। महावत का बेटा होगा, उसने सोचा। वह आया भी महावत के ही साथ था। शायद गांव से अभी अभी आया है। पर वह हाथियों से बिल्कुल डर नहीं रहा था। भालू को लगा, हाथियों को वह पहले से जानता होगा।

तभी लड़के की नजर भालू पर पड़ी। वह बहुत खुश हुआ। इतना छोटा भालू उसने पहली बार देखा था। वह दौड़ता हुआ भालू के नजदीक आया। भालू इसके लिए तैयार नहीं था। उसने आंखें बंद कर लीं।

लड़के ने उसे भी वैसे ही सहलाने की कोशिश की जैसे हाथियों को सहला रहा था। भालू को यह अच्छा नहीं लगा। मान न मान मैं तेरा मेहमान। वह वैसे ही परेशान था। ऊपर से जाने कहां से यह लड़का आ गया। भालू ने गुर्रा कर पंजा मारा।

लड़का चीख मारकर भागा। डर के मारे वह जोर जोर से रोने लगा। सारे जानवर चौंककर उधर देखने लगे। महावत दौड़ता हुआ आया। उसने बेटे को गले से लगा लिया। उसका हाथ देखा तो पंजे की हल्की सी खरोंच लगी हुई थी। महावत ने भालू की ओर गुस्से से देखा, पर कहा कुछ नहीं।


CIRCUS

महावत अपने बेटे को देर तक पुचकारता रहा। लड़के ने किसी तरह रोना बंद किया। अब उसे गुस्सा आने लगा। उसने एक छड़ी उठाई और भालू को मारने दौड़ा। पिता ने लपककर लड़के को पकड़ लिया। महावत ने उसके हाथ की छड़ी भी ले ली।

लड़का कहने लगा, "बापू, यह भालू बहुत खराब है। मैं तो इसे प्यार कर रहा था और इसने मुझे पंजा मार दिया।"

पिता ने उसे समझाया, "नहीं बेटा, यह बेचारा भी बच्चा ही है—तेरी तरह। वह शायद डर गया होगा। इसे अपने माता-पिता से अलग कर दिया गया है। इसलिए बहुत दुखी रहता है। किसी से बोलता-चालता भी नहीं है।"

लड़का अभी भी गुस्से में ही था। इस पर महावत बोला, "अच्छा, तुझे एक बात पता है ?"

लड़का मुंह देखने लगा।

"भालू का नाम जानता है ?" महावत ने पूछा।

लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया।

"तू नहीं जानता न! चलो मैं ही बता देता हूं। तेरा नाम है गोलू, ठीक? और भालू का नाम है—भोलू। यह कहकर महावत हंसने लगा।

लड़का भी मुस्कराए बिना न रह सका।

महावत फिर बोला, "है न मजेदार बात! एक भोलू है, दूसरा गोलू है। इस पर मैं तुझे एक कविता सुना सकता हूं। सुनाऊं?" और गोलू के उत्तर की प्रतीक्षा किये बगैर वह सुनाने लगा :

"एक था भोलू, एक था गोलू
चला भोलू से मिलने गोलू
भोलू को था गुस्सा आया
गोलू उस को जरा न भाया
नाक सिकोड़ी और गुर्राया
पंजा मारा दूर भगाया।"

"कैसी रही कविता?" पिता ने पूछा और दोनों मिल कर खूब हंसे।

उस दिन से गोलू रोज दिखाई देने लगा। वह अपने पिता के साथ आता। कुछ क्षण भोलू के पास रुकता। उसे देखता और चला जाता। वह भोलू से कुछ नहीं बोलता था। भोलू भी उससे कुछ नहीं कहता। पर वे एक दूसरे को

देखते रहते। भोलू को अपनी गलती महसूस होती। धीरे धीरे उन दोनों के बीच मन मुटाव खत्म हो रहा था। भोलू चाहता था, गोलू से बात करे। गोलू भी बोलना चाहता था, पर वह भोलू के गुस्से से डरता था।

अब भोलू रोज उसका इंतजार करने लगा था। गोलू आता, भोलू को दूर से ही देखता और आगे निकल जाता। भोलू देखता रहता। गोलू कभी हाथियों को खाना खिलाता। कभी उनकी सूंड को सहलाता और कभी उनके पैरों से लिपट जाता। हाथी सूंड उठाकर उसका अभिवादन करते और उसे दुलारते। बड़ा हाथी ऐरावत गोलू को सूंड के सहारे अपनी पीठ पर बैठाता और वहीं बाड़े में चक्कर लगाता। गोलू हाथी की पीठ पर बैठा कभी खुशी में किलकारी मारता तो कभी अपने बापू को हाथ हिला हिलाकर पुकारता।

भोलू को गोलू बहुत अच्छा लगने लगा था। वह उससे हर हालत में बात करना चाहता था। पर समझ में नहीं आता था कि शुरुआत किस तरह से हो। सोचते सोचते एक दिन उसे तरकीब सूझ ही गयी। अगले दिन जब भोलू ने गोलू को आते देखा तो वह कलाबाजियां खाने लगा। फिर वह दो पैर पर खड़ा हो कर ठुमक-ठुमक कर नाचने लगा। उसके पैरों के घुंघरू छम छम बजने लगे। गोलू ने ऐसा नाच कभी नहीं देखा था। उससे रहा नहीं गया। वह तालियां बजा बजाकर भोलू को शाबाशी देने लगा।

भोलू के नाच ने सारे जानवरों को चकित कर दिया। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आज भोलू को हो क्या गया है। वह अचानक इतना प्रसन्न कैसे हो गया है। उन्हें भी खुशी हुई। सब अपनी अपनी जगह से नाच का आनंद लेने लगे।

हाथियों ने कहा, "शाबाश रे भोलू! बहुत अच्छा, बहुत अच्छा।" शेर भी हंसे बिना नहीं रह सके। वे गुर्राये, "वाह, बेटा भोलू, वाह! क्या बात है। अरे भई, तू तो पूरा कलाकार निकला।"

सारे घोड़े एक साथ हिनहिनाये, "हा, हा, ही, ही।"

यहां तक कि बकरियों से भी तारीफ किये बिना नहीं रहा गया। मिमियाते हुए वे बोलीं, "अच्छा नाचते हो, बहुत अच्छा।"

देखा देखी छोटे हाथी का भी नाचने का दिल कर आया। उसने अभी झूमना शुरू भी नहीं किया था कि सारे जानवर उस पर बरस पड़े :

"ऐ छुटके हाथी, जरा शांति कर। तेरा नाच बहुत देखा हुआ है।" छोटे

हाथी को बुरा लगा, पर करता भी क्या। उसे रुकना पड़ा। गोलू को नाच बेहद पसंद आया। उसने भोलू से कहा, "एक बार और नाचकर दिखाओ।"

भोलू और चाहता भी क्या था। उसने फौरन नाचकर दिखा दिया। "एक बार और नाचो", गोलू ने फिर फरमाइश की।

भोलू नाराज नहीं हुआ। उसे खुशी हुई कि चलो, गोलू को मेरा नाच पसंद तो आ रहा है। जिंदगी में पहली बार भोलू को अपने नाच पर आनंद आया। वह रिंगमास्टर के कोड़े के इशारे पर ही नाचा करता था। दर्शकगण, जिनमें अधिकतर बच्चे होते, जब तालियां बजाकर उसकी तारीफ करते, तब भी उसे कोई ज्यादा खुशी नहीं होती थी। भला डंडे के बल पर नाचना भी कोई नाचना है। पर आज तो वह अपनी मर्जी से नाच रहा था। देखने वाले भी सचमुच उसके नाच का पूरा आनंद ले रहे थे।



हाथी की सवारी

इस तरह दोनों में दोस्ती हो गयी। अब गोलू जब तब सिर्फ भोलू से मिलने आने लगा। दोनों मिलकर खेला करते। इससे कभी कभी हाथी नाराज हो जाते। उनकी खीझभरी चिंघाड़ सुनकर गोलू दौड़कर जाता। उनकी सूंड को सहलाता। उन्हें हरा चारा खिलाता। बड़े हाथी की पीठ पर सवारी करता। इस तरह उन्हें मनाकर फुर्ती से लौट आता। जब वह हाथियों की सवारी कर रहा होता, भोलू दो पैरों पर खड़ा होकर गोलू को बड़ी हसरत से देखा करता। खुशी में कभी वह ताली बजाता और कभी यों ही उछलने लगता था। गोलू को बुरा लगता कि भोलू उसके साथ नहीं है। एक दिन उसने सोचा, क्यों न भोलू भी हाथी की सवारी करे ?

गोलू ने हाथियों को अपनी बात बतायी। सब हाथियों ने एक साथ स्वीकृति में अपनी अपनी सूंड आकाश में उठा दी। उन्हें आपत्ति भी क्या हो सकती थी। गोलू और भोलू मिलकर भी उन के लिए कोई बोझ नहीं थे। फिर वे तो यही चाहते थे कि गोलू उन के साथ रहे। उनके साथ भी खेले। भोलू के आ जाने से वे सब मिलकर खेल सकते थे।

अगले दिन गोलू ने चुपचाप भोलू की रस्सी खोली और दोनों हाथियों के बाड़े में जा पहुंचे। उन्हें देखकर हाथी बड़े खुश हुए। सब ने मिलकर उनका स्वागत किया। ऐरावत फौरन जमीन पर बैठ गया। पर वह बहुत बड़ा हाथी था। बैठने के बावजूद गोलू के लिए उस पर चढ़ पाना आसान नहीं था। भोलू फौरन स्थिति को समझ गया। उसने अपनी पीठ लगा दी। भोलू की पीठ के सहारे गोलू आसानी से हाथी की पीठ पर जा बैठा।

अब भोलू की बारी थी। ऐरावत की पीठ पर चढ़ना उसके लिए भी आसान नहीं था। जैसे ही वह चढ़ने लगा, ऐरावत हाथी जोर जोर से हिलने डुलने लगा।

भोलू बोला, "अरे भई ये क्या कर रहे हो ?"

हाथी ने हिलना बंद करते हुए कहा, "अच्छा जल्दी चढ़ो।"

भोलू ने फिर चढ़ने का प्रयत्न किया। हाथी फिर हिलने लगा।

भोलू को गुस्सा आ गया। बोला, "तुम नहीं चाहते कि मैं तुम्हारी पीठ पर बैठूं। मैं जैसे ही चढ़ने को होता हूं, तुम हिलने डुलने लगते हो। मैं नहीं करता तुम्हारी सवारी। मैं जा रहा हूं।"

हाथी बोला, "लो सुनो। अरे गड़बड़ मैं कर रहा हूं या तुम कर रहे हो ? देखते नहीं कितने तो तुमने नाखुन बढ़ा रखे हैं। तुम चढ़ रहे हो या मेरी पीठ पर गुदगुदी कर रहे हो ?"

गोलू की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर हो क्या रहा है। उसे शंका हुई, कहीं दोनों लड़ना न शुरू कर दें। वह बोला, "आओ भई, आओ न। देर क्यों हो रही है ?" और वह झुककर भोलू का हाथ पकड़ उसे ऊपर को खींचने लगा।

भोलू भारी था। इतनी आसानी से खिंचने वाला नहीं था। गोलू ने ज़ोर लगाया। भोलू ने चढ़ने की कोशिश में अपने पंजे मारे। इससे हाथी को गुदगुदी होने लगी। उसने जितना संभव हो सका, अपने को रोकने की कोशिश की। लेकिन भोलू को ऊपर चढ़ने के लिए जोर जोर से हाथ-पैर चलाने पड़ रहे थे। इससे हाथी को इतने जोर की गुदगुदाहट हुई कि वह अपने को रोक नहीं सका और इतनी जोर से हिला कि भोलू तो भोलू, गोलू भी संभल नहीं पाया। वह हाथी की पीठ से खिसका और देखते ही देखते भोलू समेत जमीन पर जा गिरा।

बाड़े में खलबली मच गयी। पहले तो सारे हाथी डरे कि कहीं गोलू और भोलू को चोट तो नहीं आयी। गनीमत थी कि जमीन पर काफी घास थी। नहीं, किसी को कुछ नहीं हुआ था। गोलू और भोलू खिसियाये हुए एक दूसरे का मुंह देख रहे थे। अब हाथियों के लिए अपनी हंसी रोकना संभव नहीं रहा।

गोलू ने हंसी की परवाह न कर फिर से चढ़ने का प्रयत्न किया। भोलू ने झुककर पीठ लगायी। गोलू अभी भोलू की पीठ पर पैर रखने ही वाला था

कि उसे लगा वह हवा में उड़ रहा है। असल में हुआ यह कि चंपा हथिनी को डर लगा कि इस उछल कूद में गोलू कहीं फिर गिर गिरा न जाये। उसने गोलू को अपनी सूंड में उठा लिया और इससे पहले कि गोलू की समझ में कुछ आता, उसे हाथी की पीठ पर रख दिया।

उधर भोलू पीठ लगाये खड़ा गोलू के चढ़ने का इंतजार कर रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि देर क्यों हो रही है। उसने सोचा, देखूं तो, आखिर हो क्या रहा है। वह मुड़ा भी नहीं था कि अचानक उसके पैर उखड़ गये और वह हवा में उड़ने लगा। इससे पहले कि संभल पाता, भोलू भी गोलू के पीछे हाथी की पीठ पर था।

सारे हाथी हंस रहे थे। गोलू भी हंस हंस कर दुहरा हुआ जा रहा था। पर भोलू हक्का बक्का था कि हुआ क्या। दरअसल उसे भी दो हाथियों ने दोनों ओर से अपनी सूंड में पकड़ कर उठाया था और ऐरावत की पीठ पर रख दिया था। जब बात समझ में आयी तो वह भी मुस्करा दिया।

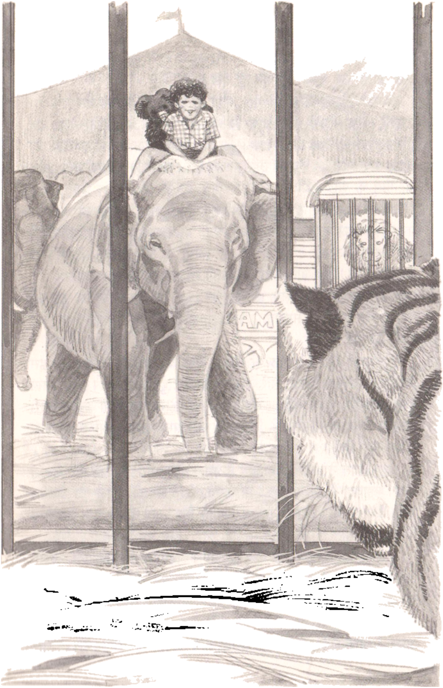
ऐरावत खड़ा होने लगा तो भोलू को डर लगा। उसने गोलू को कस कर पकड़ लिया। गोलू ने समझाया, "अरे, घबराओ मत, कुछ नहीं होता । बस सीधे बैठे रहो।"

ऐरावत दोनों को पीठ पर बिठाये बाड़े के चक्कर लगाने लगा। इस विचित्र सवारी को देखकर सारे जानवर लोटपोट हुए जा रहे थे। इससे इतना हल्ला मचा कि महावत दौड़ता चला आया। उसके साथ और भी कई कर्मचारी इकट्ठा हो गये। सौभाग्य से रिंगमास्टर उस समय सोया हुआ था। उसकी आंख नहीं खुली।

महावत ने हाथी को डांटकर बैठाया। गोलू और भोलू को नीचे उतारा गया। महावत ने उन दोनों को भी कसकर डांट लगायी। भोलू पूंछ दबाकर भागा और चुपचाप अपनी जगह पर जाकर बैठ गया। चौकीदार ने उसे बांध दिया।

इधर अपने तंबू में ले जाकर महावत ने अपने बेटे को समझाया, "देखो, अगर तुम इस तरह की हरकतें करोगे तो ये लोग मुझे नौकरी से निकाल देंगे। यह बात ठीक नहीं है। इस तरह के काम मत किया करो।"

बापू समझाते रहे, "अगर भालू गिर जाता तो ? नया भालू कहां से आता ? भालू को सिखाना कोई आसान काम नहीं है। रिंगमास्टर मेरी तो जान


AM

ही ले लेता। समझे!" गोलू चुपचाप सब सुनता रहा और एक कोने में जाकर बैठ गया।

इस घटना के बाद गोलू और भोलू की दोस्ती कम होने की जगह और पक्की हो गयी। हां, उन्होंने फिर कभी वैसी हरकत नहीं की।



चली रे पतंग

उस दिन गोलू दोपहर में ही दौड़ता हुआ आया।

धूप थोड़ी तेज थी। भोलू शेर के पिंजरे की छाया में ऊंघ रहा था। गोलू ने उसे झकझोर दिया और बोला, "सो रहे हो। देखो, मेरे पास क्या है ?"

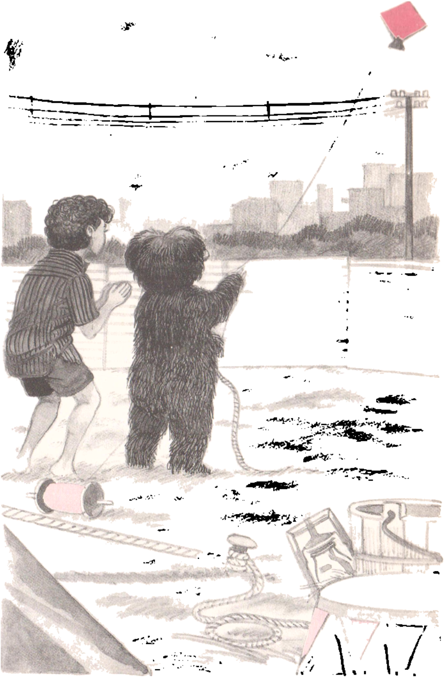
गोलू बहुत प्रसन्न था। उसकी आंखें खुशी से चमक रही थीं।

भोलू ने ऐसी चीज पहले कभी नहीं देखी थी। उसकी समझ में नहीं आया यह क्या हो सकता है। भोलू आदमियों की भाषा को समझ जाता था। पर बोल नहीं पाता था। उसने सिर्फ कूं-कूं की आवाज की, जिसका अर्थ था--बताओ, तुम ही बताओ।

गोलू मुस्कराता हुआ बोला, "पतंग है। मेरे बापू लाये हैं। उड़ायेंगे।"

भोलू अब भी नहीं समझ पाया कि पतंग क्या बला होती है। गोलू ने पतंग को एक साफ सी जगह पर रखा। चरखी में से टुकड़ा तोड़ा और कन्ने बांधने लगा। कन्ने बंध गये। उसने डोर बांधी। पतंग को एक जगह रखा। चरखी खोलता हुआ दूर चला गया। भोलू चकित था। आखिर हो क्या रहा है। गोलू ने डोर को खींचा और धीरे धीरे झटके मारकर पतंग को देखते ही देखते आकाश में उड़ा दिया। जैसे जैसे पतंग आकाश चढ़ती गयी, भोलू खुशी से उतना ही उछलने लगा। धीरे धीरे जब पतंग काफी ऊंचाई पर पहुंच कर स्थिर हो गयी तो गोलू ने भोलू से पूछा, "तुम उड़ाओगे ?"

भोलू घबराया। गोलू ने डोर उसके हाथ में थमानी चाही। भोलू पीछे को हटा। उसने मना करना चाहा, पर गोलू नहीं माना। बोला, "डरो नहीं यार। इसमें क्या रखा है ? बस तुम पकड़े रहना। कुछ नहीं होगा। मैं तो यहां हूं



ही।" गोलू ने उसे समझा दिया कि डोर कैसे पकड़नी है। जरूरत पड़ने पर किस तरह थोड़ी थोड़ी खींचनी है, या ढील दे देनी है।

पतंग उड़ने लगी। भोलू को मजा आने लगा। गोलू तालियां बजाने लगा। थोड़ी देर तो पतंग ठीक उड़ती रही, पर अचानक न जाने क्या हुआ। पतंग एक ओर को झुकी। जब तक भोलू चीखा और गोलू डोर संभाल पाया, पतंग काफी झोंक खा चुकी थी। गोलू ने बहुत कोशिश की, पर पतंग नहीं संभली और सामने बिजली के तारों में जा उलझी।

पतंग को तार पर उलझा देख, भोलू का दिल बैठने लगा। गोलू देर तक कोशिश करता रहा कि किसी तरह पतंग निकल आये। पर पतंग ऐसी फंसी कि किसी तरह नहीं निकली। आखिर डोर टूट गयी और पतंग लटकी रह गयी।

भोलू को बहुत बुरा लगा। कैसी बढ़िया चीज थी। चिड़ियों की तरह उड़ती थी। उसके कारण हाथ से निकल गयी। अब खंभे पर जा बैठी है। भोलू मान रहा था कि पतंग भी कोई चिड़िया होती होगी। यह नहीं सोच पा रहा था कि दुनिया में ऐसी भी चीजें हैं जो आदमी के इशारे पर बिना पंखों के भी उड़ सकती हैं। भोलू के लिए जो भी चीज आकाश में उड़ती थी, वह किसी न किसी तरह की चिड़िया ही थी।

भोलू ने सोचा, अगर कहूं तो शायद लौट आये। "वाव! वाव, वाव!" वह जोर से बोला और देर तक बोलता ही गया--"अरी पतंग सुनो। यह लड़का बहुत अच्छा है। रिंगमास्टर सा नहीं कि बात बेबात पर मारपीट करे। वापस क्यों नहीं आ जाती ? खंभे पर लटके रहने का क्या फायदा। आ जाओ। यह लड़का मेरा दोस्त है। तुम्हें प्यार करेगा।" पर पतंग तो सुन नहीं सकती थी। वह लटकी ही रही। आखिर भोलू थक हार कर चुप हो गया।

बुरा तो गोलू को भी लग रहा था, पर वह इस तरह से न तो उदास था, न परेशान। भोलू की चीख पुकार उसकी समझ में नहीं आयी। उसने जल्दी जल्दी डोर लपेटी, पसीना पोंछा और भोलू से बोला,"कोई बात नहीं। बापू मेरे लिए और पतंग ले आयेंगे।"

उसने देखा, भोलू की आंखों में आंसू हैं। वह मुस्कुराया,"तुम रो क्यों रहे हो ? अरे यह तो होता ही रहता है। पतंग थी, उलझ गयी। कोई क्या कर सकता है। फिर पतंगें तो उलझती ही रहती हैं। मुझसे भी उलझ सकती थी।"

उसने भोलू का माथा सहलाया और बोला, "चलो, फुटबाल खेलते हैं।" कुछ देर दोनों फुटबाल खेलते रहे। भोलू का मन खेल में नहीं लगा। इसके अलावा सर्कस का समय भी हो गया था। भोलू को अंदर जाना पड़ा।



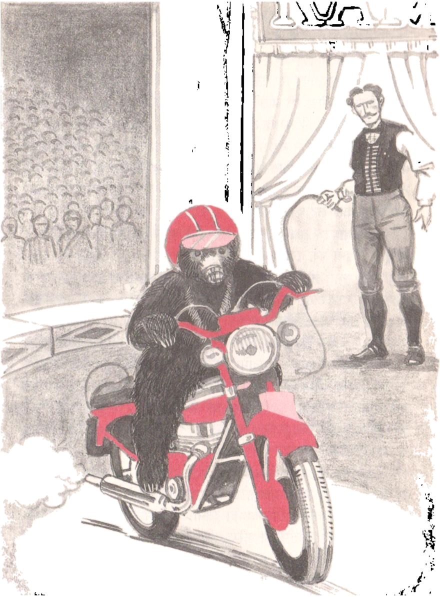
रिंगमास्टर का कोड़ा

जब सर्कस का शो चलता तो गोलू भी अंदर ही जा बैठता था। बाहर करता भी क्या ? कोई तो होता नहीं था। उस दिन भी वह पंडाल में जा पहुंचा।

भोलू का मन अस्थिर हो चुका था। किसी काम में नहीं लगा। शो में वह फुटबाल तो किसी तरह खेल गया। अगला करतब मोटरसाइकिल चलाने का था। उसे रोज की तरह मोटरसाइकिल पर बिठा दिया गया और वह चक्कर लगाने लगा। पंडाल में बैठे बच्चे उसे देखते ही किलकारियां मारते जोर जोर से ताली बजाने लगे। भोलू को अचानक याद आया कि जब पतंग उड़ रही थी तो वह भी इसी तरह तालियां बजा रहा था। यही नहीं, जब वह पतंग उड़ा रहा था तो गोलू भी इसी तरह खुश हो रहा था।

अचानक भोलू को लगा, पतंग फिर से उड़ने लगी है। उड़ते उड़ते आकाश में दूर चली गयी है। भोलू ने अचानक हैंडिल से हाथ हटाया और ताली बजाने लगा। उसे ध्यान ही नहीं रहा कि वह मोटरसाइकिल चला रहा है। उसका संतुलन बिगड़ा, मोटरसाइकिल जोर से हिली और वह संभाल नहीं पाया। उसके गिरते ही रिंगमास्टर ने फौरन गुस्से से कोड़ा फटकारा। भालू को फिर से मोटरसाइकिल पर बिठाया गया। परंतु वह इतना घबरा गया था कि इस बार भी ठीक से मोटरसाइकिल नहीं चला पाया।

खेल खत्म हो गया। सब जानवरों को अपने अपने पिंजरों में ले जाया जाने लगा। गोलू भी अपने तंबू में लौट आया। उसके पिता थोड़ी देर बाद आये। उन्होंने बताया कि रिंगमास्टर भोलू से बहुत नाराज हैं। इसलिए आज उसका खाना बंद कर दिया गया है।



यह सुन कर गोलू को बहुत दुख हुआ। वह बोला, "बापू, गलती तो किसी से भी हो सकती है। फिर वह तो बेचारा बच्चा है।"

"हां, बात तो तुम्हारी सही है।" बापू उसकी बात पर हंसते हुए बोले, "पर भोलू तो जानवर है। उसे इसी तरह सिखाना पड़ता है।"

गोलू को पिता की बात जंची नहीं। वह कुछ देर चुप रहा। फिर बोला, "बापू उसे कुछ खाने को दे आऊं ?"

"नहीं।" पिता ने लड़के को समझाया, "अगर रिंगमास्टर को पता चल गया तो वह मालिक से शिकायत कर देगा। तब मुझे भी डांट पड़ेगी कि तुम्हारा बेटा जानवरों को बिगाड़ रहा है। उस दिन भी तुम भोलू के साथ मिलकर अजीब हरकत कर चुके हो।"

"पर बापू हम तो सिर्फ सवारी कर रहे थे। हमने तो और कुछ नहीं किया।" गोलू ने अपना पक्ष रखने की कोशिश की।

"यह बात तो तेरी ठीक है बेटा, पर भोलू हाथी की पीठ से गिर भी तो सकता था। अगर गिरकर मर जाता या उसका कोई हाथ पैर टूट जाता तो ? मालिकों ने भोलू को सिखाने में पैसा लगाया है। वह सर्कस का एक कलाकार है। यही सब देखने के लिए तो लोग पैसा देकर टिकट खरीदते हैं।"

गोलू सोचने लगा – 'आदमियों ने जानवर इसलिए पकड़ रखे हैं कि उनके करतब दिखाकर पैसा कमा सकें। इसके लिए आदमी उन्हें मार मारकर अजीब अजीब करतब सिखाते हैं। शेर को आग के घेरे के बीच से कुदवाते हैं। हाथी को नचाते हैं और छोटे से स्टूल पर खड़ा होने के लिए मजबूर करते हैं। भालू से मोटरसाइकिल चलवाते हैं।'

कुछ देर चुप रहने के बाद गोलू बोला, "बापू, भोलू बहुत अच्छा और समझदार है। वह अभी बहुत छोटा है, मुझसे भी छोटा। मुझे मोटरसाइकिल चलानी आती है क्या ? फिर वह तो इतनी अच्छी मोटरसाइकिल चलाता है। अगली बार ऐसी गलती नहीं करेगा। मैं उसे समझा दूंगा। उसे एक रोटी दे आऊं ?"

गोलू ने आखिरी कोशिश की थी; पर बापू नहीं माने। उन्होंने गोलू को सख्त हिदायत दी, "तुम भोलू को कुछ भी देने नहीं जाओगे।"

गोलू बहुत निराश हो गया। उससे खाना नहीं खाया गया। जैसे ही रोटी का कौर मुंह में डालता, गले में अटक जाता। उसने सारी रोटियां चुपचाप अपनी

जेब में रख लीं। वह अब इसी उधेड़बुन में था कि रोटियां भोलू को किस तरह देकर आये ? अंततः उसने फैसला कर ही लिया। हाथ मुंह धोकर वह चुपचाप बिस्तर में जा लेटा, और बापू के सोने का इंतजार करने लगा।

बापू दिन भर के थके थे। जल्दी ही खर्राटे भरने लगे। जब उसे विश्वास हो गया कि बापू गहरी नींद में सो गये हैं वह धीरे धीरे उठा। रोटीवाली जेब को एक हाथ से दबाया। फिर दबे पांव अपने तंबू से निकला और जानवरों के बाड़े की ओर बढ़ गया।

सबसे पहले शेरों के पिंजड़े थे। जरा सी आहट पर उनके कान खड़े हो गये। सबसे बड़ा शेर गुर्राया--"कौन?"

गोलू ने डर कर कहा, "शेर दादा, मैं हूं। मैं गोलू। महावत जी का लड़का।"

शेर उसकी बात सुनकर भी धीरे धीरे गुर्राता रहा, मानो पूछ रहा हो, "इस समय तुम यहां क्या कर रहे हो ?"

गोलू ने हाथ जोड़कर घिघियाते हुए कहा, "अरे बाबा, जरा धीरे बोलो न। मैं कुछ करने नहीं आया हूं। बस, समझो नींद नहीं आ रही थी; इसलिए भोलू से मिलने जा रहा हूं। सुना, आज वह मोटरसाइकिल से गिर गया था। कहीं चोट वोट न आ गयी हो। जरा देखकर आता हूं। दिन में तो मुझे समय नहीं मिलता, बहुत सारे काम रहते हैं।"

शेर सहमति में चुप हो गया।

अब तक बाकी जानवर भी जाग गये थे। उन्होंने दोनों की बातचीत सुन ली थी, इसलिए फिर किसी ने उससे कुछ नहीं पूछा। सब समझ गये कि गोलू भोलू से मिलने क्यों जा रहा है।

गोलू की आवाज सुनकर भोलू खड़ा हो गया था। उसे तो वैसे ही नींद नहीं आ रही थी। भूख उसे इतना नहीं सता रही थी, जितना कि दंड का अपमान। जब भी उसे दंड मिलता था, उसे फौरन घर की याद आने लगती थी। आज भी वह अपने माता-पिता, भाई-बहन और दोस्तों के बारे में सोच रहा था। वहां उस पर कोई पाबंदी नहीं थी। वह जंगलों में घूमा करता था। जब भूख लगती, कुछ भी मनचाहा खा लेता था। वहां न जबर्दस्ती फुटबाल खेलनी होती थी न मोटरसाइकिल चलानी पड़ती थी। खाना-पीना और जहां चाहा मस्त घूमते रहना। घर की याद ने उसे बेचैन कर दिया था। उसके आंसू बह रहे थे। इससे पहले कि गोलू देख पाता, उसने आंसू पोंछ लिये।

गोलू ने भोलू के हाथ पैरों को धीरे धीरे सहलाते हुए पूछा, "कहीं चोट तो नहीं आयी ?"

भोलू चुप रहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे ? कैसे कहे ?

गोलू ने झट जेब से रोटियां निकाल उसके सामने रखते हुए कहा, "लो, खा लो।"

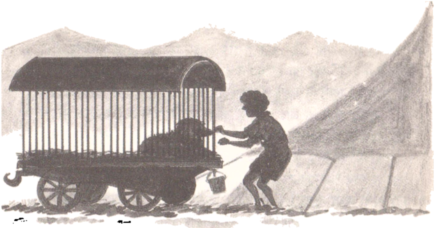
भोलू का गला रुंध गया। गोलू ने भोलू की थूथन पर हाथ फेरते हुए कहा, "लो खाओ। उस बात को भूल जाओ। ये बहुत खराब लोग हैं। पर तुम्हें भी मोटरसाइकिल ध्यान से चलानी चाहिए। अगर जोर से गिर जाते और ज्यादा चोट लग जाती तो ? फिर क्या होता ?"

भोलू को फिर से घर की याद आने लगी—अपने मां-बाप, अपने भाई-बहन, अपने सगे संबंधी, नाते-रिश्तेदार, सब की। जंगल में वह कितने आराम से रहता था। हरदम नाचता-कूदता। वहां कितनी आजादी थी। सब लोग उसे कितना प्यार करते थे। उसके मां-बाप चाहे भूखे रह लें, पर ऐसा नहीं होता था कि उसके लिए खाना न हो। गलती हो जाती तो भी न कोई उसे मारता था, न भूखा रहने की सजा देता था। भोलू सुबक सुबक कर रोने लगा।

गोलू ने उसे गले लगा लिया। "रोओ मत। अच्छे बच्चे कहीं रोते हैं," उसने भोलू को समझाया। "मैं रिंगमास्टर का इंतजाम करके ही छोडूंगा। यह अपने को समझता क्या है ? इसकी सारी बदमाशी मैं देख लूंगा। मैं बापू से कहूंगा कि इसने भोलू को बिना बात के मारा है। इसकी पिटाई कर देना। वो मेरी बात नहीं टालते।"

पर अंदर से गोलू सशंकित हो उठा। कहीं भोलू को पता न चल जाये कि उसके पिता इस बारे में कुछ नहीं कर सकते।

उसने अपने को सुधारा, "ठीक है, अगर बापू कुछ नहीं करेंगे तो क्या हुआ। मेरा दोस्त है न ऐरावत हाथी, जो मुझे रोज घुमाता है। वह मेरी बात जरूर मान लेगा। मैं कहूंगा कि इस बदमाश रिंगमास्टर को जरूर सजा मिलनी चाहिए। यह जानवरों को बेमतलब परेशान करता है। जानवर तो बेचारे भोले हैं। इतने प्यारे हैं। इसको दया क्यों नहीं आती। अब भला गलती किससे नहीं होती ? इसमें मारने पीटने की क्या जरूरत है। अरे, बहुत हुआ तो डांट देता,



बस! पर नहीं, हर वक्त हंटर लेकर घूमता रहता है। जब तब, जिस तिस पर फटकार देता है। हाथी उसको एक ही बार में सुधार देगा। अपनी सूंड में लपेटेगा और आकाश में उछाल देगा। तब इस भाई को पता चलेगा। जब रोयेगा न कि हाय, मुझे बचाओ, मुझे बचाओ, हम में से कोई इसे नहीं बचायेगा। तुम भी भोलू मत जाना। रोने देना। आगे से सुधर जायेगा।"

भोलू उसकी बात पर हंसने लगा।

गोलू की समझ में बात आ गयी। उसने हार नहीं मानी। बोला, "ठीक है, ठीक है। हाथी उससे डरता होगा तो क्या है ? शेर भी तो मेरा दोस्त है। वह मुझसे हाथ मिलाता है, रोज। वह मुझे बड़ा प्यार करता है। जानते हो, वह कितना खतरनाक है। सब लोग उससे डरते हैं। मैं उससे कहूंगा। शेर एक दहाड़ मारेगा तो इसका सारा गुस्सा हवा हो जायेगा। ये अपने आपको समझता क्या है। इसका हंटर वंटर सब छीन लिया जायेगा।"

इस बार भोलू जोर जोर से हंसने लगा। "अरे धीरे हंसो", गोलू घबरा गया। "बापू उठ जायेंगे। आओ, चलो अच्छे बच्चे की तरह खाना खा लो।"

गोलू ने एक ग्रास तोड़कर भोलू के मुंह में डाला और इस तरह भोलू खाने लगा। गोलू ने उसे बहुत शाबाशी दी। भोलू ने भी रोटी का एक टुकड़ा तोड़ा और गोलू के मुंह में डालना चाहा।

गोलू बोला, "अरे तुम मुझे खिला रहे हो। मैने तो बहुत खाया है। तुम खाओ। रोटी ही कितनी है। दो रोटी से तुम्हारा क्या होने वाला है।"

पर भोलू ने तब तक और खाने से इंकार कर दिया जब तक कि गोलू ने उसके साथ नहीं खाया। रोटी चाहे दो ही थीं, पर इतनी स्वादिष्ट रोटी वे जिंदगी में पहली बार खा रहे थे। न उन्हें रोटी की कमी खल रही थी, न सब्जी का अभाव। खाने में ऐसा संतोष मिलता है, उन्होंने पहली बार जाना।

खाना खाने के बाद गोलू ने कहा, "देखो भोलू मैं जानता हूं कि जब तक हंटर है, रिंगमास्टर से नहीं निपटा जा सकता। मैंने कई बार इस बारे में सोचा है, पर हंटर से भी बड़ी बात यह है कि जानवरों में हिम्मत नहीं है। देखो न, जब तुम सर्कस में होते हो तो क्या तब तुम्हारे हाथ बंधे होते हैं ? क्या हाथी बंधा होता है ? क्या शेर पिंजरे में होता है ? तुम्हारी बात छोड़ देते हैं। यह बताओ, क्या रिंगमास्टर हाथी से ज्यादा ताकतवर है ? क्या शेर रिंगमास्टर से कमजोर होता है ? फिर ये उसका हंटर क्यों नहीं छीनते ?"

बात ठीक थी। शेर, हाथी आदि सभी जानवर रिंगमास्टर से तो ज्यादा ताकतवर और खतरनाक हैं ही।

"देखो। इस समय ये सारी बातें नहीं हो सकतीं। पर तुम्हें एक बात बता देता हूं। मान लो, शेर रिंगमास्टर की बात न सुने तो वह शेर का क्या कर लेगा ? हंटर ही तो मारेगा न। हंटर से क्या हो जायेगा ? लगने दो एक हंटर। शेर एक झपट्टा मारकर उसका हंटर छीन ले तो वह क्या कर सकता है? साहब दौड़ते नजर आयेंगे।"

भोलू को लगा कि बात तो ठीक है, पर जितनी सीधी लग रही है, उतनी आसान है नहीं। आखिर कोई तो कारण होगा कि शेर भी हंटर से डरता है। अगर हंटर छीनने से ही काम हो जाता तो फिर आज तक जानवर यह गुलामी क्यों सहते ? जानवर आखिर इतने डरपोक तो नहीं हैं कि एक हंटर ही न छीन पाते। डर सिर्फ हंटर का ही नहीं, कुछ और भी है। वह क्या है, यह उसकी समझ के बाहर था। इसलिए वह चुप रह गया।

गोलू को भी लगा, उसकी बात में कहीं कुछ कमी है। पर क्या? यह सोचने का मौका नहीं था। बोला, "इस समय मैं चलता हूं। कहीं बापू उठ गये तो गड़बड़ हो जायेगी। कल मिलूंगा।"

गोलू का सपना

गोलू को देर रात तक नींद नहीं आयी। वह सोचता रहा, आखिर किस तरह से वह भोलू को इस बंधन से मुक्त करा सकता है ? सोचते सोचते ही उसे न जाने कब नींद आ गयी।

वह सपना देखने लगा एक मोटरसाइकिल के पीछे बैठकर वह जा रहा है। लाल रंग की मोटरसाइकिल बहुत ही खूबसूरत है। उसे याद आया, अरे! यह मोटरसाइकिल तो रिंगमास्टर की है, पर इसे चला तो अपना भोलू रहा है।मोटरसाइकिल पूरी तेजी से चली जा रही थी। उसे बड़ा मजा आ रहा था। सनसनाती हवा में उसके बाल उड़े जा रहे थे। भोलू के बाल लहरा रहे थे। उसने भोलू को कसकर पकड़ रखा था। भोलू मस्ती में गाना गा रहा था :

रंग-बिरंगी न्यारी है
दो पहियों की सवारी है
मोटरसाइकिल प्यारी है
लेकिन नहीं हमारी है।

फिर भी साथ निभाती है
थोड़ा बहुत सताती है
"किक" मारो तो कहती है
चलते हैं क्या जल्दी है।

बचना भईया, बचना बहना
हारन तब ये बजाती है



जहां कहीं भी जाना हो
जितनी दूर ठिकाना हो
फिर तो बस पहुंचाती है।

हम अपने घर जाते हैं
सुख के दिन बस आते हैं
सब को अब समझाते हैं
इन की पोल बताते हैं।

हम को ये डरवाते थे
रस्सी से बंधवाते थे
हंटर से पिटवाते थे
बेमतलब धमकाते थे।

अब ये भी पछतायेंगे
हाथ जोड़ चिल्लायेंगे
तब हम दूर भगायेंगे
थोड़ी धौंस दिखायेंगे।

हंटर धरा रह जायेगा
पिस्टल काम न आयेगा
पिंजरा भी जल जायेगा
रिंगमास्टर भग जायेगा।

फिर गोलू गाना गायेगा
तब भोलू नाच दिखायेगा
यों अपना मौका आयेगा
तब इनका जी घबरायेगा।

आयेगा जी आयेगा
अपना मौका आयेगा।

गोलू भोलू के स्वर में स्वर मिला रहा था। मोटरसाइकिल भागी चली जा रही थी। हवा से बातें करती, भोलू के घर की ओर पहाड़ी रास्ता शुरू

हो गया था, जंगलों के बीच से होता हुआ। भोलू का घर नजदीक ही था। बस, वे पहुंचने वाले थे कि किसी ने गोलू को पुकारा। उसकी नींद खुल गयी। बापू उसे उठा रहे थे, "अरे गोलू कितना सोओगे। देखो सवेरा हो गया है।"

बापू उसे चाय-नाश्ता करवाकर जाने लगे तो गोलू ने पूछा, "एक बात पूछूं बापू ?"

"क्या बात है ? पूछो ?" बापू ने प्यार से उसका सिर थपथपाते हुए कहा।

"बापू एक बात मेरी समझ में नहीं आती। जानवर आखिर रिंगमास्टर से इतना डरते क्यों है ?"

"हंटर के कारण", उन्होंने मुस्कराकर जवाब दिया।

इस पर गोलू बोला,"पर बापू, जानवर तो आदमी से ज्यादा ताकतवर हैं। अगर वो रिंगमास्टर का हंटर ही छीन लें तो ?"

"अरे बेटा", बापू हंसे, "आदमी के पास सिर्फ शरीर की ताकत ही नहीं होती। दिमाग की भी तो है। तूने कभी सोचा कि आदमी ही हंटर या अंकुश का इस्तेमाल क्यों कर पाता है ? हाथी क्यों नहीं कर पाता ? शेर क्यों नहीं कर पाता ? या वह तेरा दोस्त भोलू क्यों नहीं कर पाता ?"

"क्योंकि जानवर अच्छे होते हैं। वे किसी को मार पीट कर नचाते नहीं हैं। वे किसी की सवारी नहीं करते। सदा अपने पैरों पर चलते हैं।"

बापू हंसे और बोले, "ठीक है, तेरी बात भी ठीक है पर बेटा, असली बात यह है कि उनके पास इतनी बुद्धि नहीं है। मान लो कोई जानवर हंटर छीन भी ले तो भी वह जायेगा कहां ? हमारे पास उन्हें पकड़ने के कई तरीके हैं।"

"जैसे ?"

"जैसे जाल और पिंजरे। अगर कोई जानवर ज्यादा गड़बड़ करता है या बेकाबू हो जाता है तो बंदूक भी है। उसे गोली से मार दिया जाता है तुमने देखा है न कि जब सर्कस चल रहा होता है तो एक आदमी बंदूक लेकर खड़ा रहता है। यह बंदूक सिर्फ दिखाने के लिए तो नहीं है न।"

बापू ने पूछा, "अब मैं जाऊं ? देर हो रही है। हाथी भूखे हैं। परेशान हो रहे होंगे। उन्हें चारा देना है।"

"एक बात और बापू", भोलू ने कहा।

"तेरी बातें तो भई खत्म ही नहीं होंगी। मेरे सारे काम पड़े हैं।"

"सिर्फ एक बात", गोलू ने मिन्नत की। "आखिर आदमी जानवरों को पकड़ता क्यों है ?"

"अब तू जंगल का राजा कब से बन गया है ?" बापू ने मजाक किया।

"बताओ न बापू", वह अड़ा रहा।

"अपना काम निकालने के लिए, अपने मनोरंजन के लिए। और किसलिए", यह कह कर बापू काम पर चले गये। गोलू कुछ नहीं बोला। सोचता रहा। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को बंदी बनाना ठीक नहीं है।

गोलू उठा और सीधा भोलू के पास जा पहुंचा और उसे देर तक समझाता रहा, "देखो भोलू। जानवर अगर आदमी से डरते हैं तो वह सही है। आदमी बहुत खतरनाक है। उसके पास बंदूकें हैं। वह जानवरों को मारने से नहीं हिचकेगा। तुम हंटर न छीनना। यह बहुत खतरनाक हो सकता है। मैं दूसरी तरकीब लड़ाऊंगा।"

फिर वे थोड़ी देर फुटबाल खेलते रहे। तभी उसे रात का सपना याद आया। उसने भोलू को सुनाया। भोलू सपना सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ।

गोलू ने दिमाग पर जोर दिया तो उसे गीत की दो लाइनें भी याद आ गयीं। उसने वही गाकर सुना दीं :

रंग-बिरंगी न्यारी है
दो पहियों की सवारी है
मोटर साइकिल प्यारी है
लेकिन नहीं हमारी है।

गीत सुनकर भोलू को और भी मजा आया। वह ठुमका लगा लगाकर देर तक नाचता रहा।

गोलू खूब हंसता रहा और बार बार वही गाता रहा। अचानक गोलू को एक विचार आया। "अरे, सुनो!" उसने चिल्लाकर कहा।

भोलू घबरा गया। नाचना रोककर उसकी ओर देखने लगा।

"तुम्हें मोटरसाइकिल चलानी तो आती है। है न ?"

भोलू ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

"तो तुम भाग क्यों नहीं जाते ?"

भोलू की समझ में नहीं आया, वह कह क्या रहा है।

"तुम भाग लो। वैसे ही जैसे सपने में भागे थे।"

भोलू को बात अच्छी लगी। वह गूं-गूं-गूं-गूं करने लगा।

"पर जो मोटरसाइकिल तुम सर्कस में चलाते हो, वह तो बेकार है। तुम्हें चाहिए नयी मोटरसाइकिल, क्यों ? ऐसी मोटरसाइकिल, जैसी रिंगमास्टर की है", गोलू बोला।

रिंगमास्टर का नाम सुनते ही भोलू के छक्के छूट गये। वह "न" में सिर हिलाने लगा और हिलाता ही चला गया- न, न, न, न।

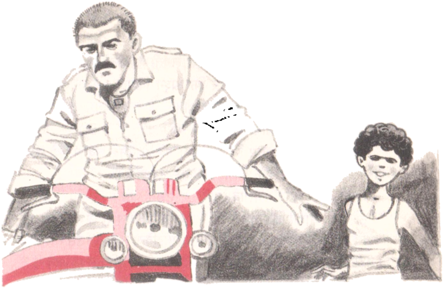
"अरे तुम घबराओ मत", उसने भोलू के कंधे पर हाथ रखकर उसे ढाढ़स बंधाया। "जरा समझो। यह कोई चोरी नहीं है। जब तुम काफी दूर निकल जाओ तो मोटरसाइकिल छोड़ देना और पैदल निकल जाना। समझ गये ना!"

पर भोलू का डर कम नहीं हुआ। वह अभी भी "न" में ही सिर हिला रहा था। गोलू अंदाज लगा सकता था कि भोलू को किस बात का डर लग रहा है। अगर भोलू भागता हुआ पकड़ा गया तो रिंगमास्टर उसकी जो दशा बनायेगा, वह सोची भी नहीं जा सकती थी। वह गोली भी चला सकता था। गोलू समझ गया कि यह योजना भी खतरनाक साबित हो सकती है।

वह सोचता रहा कि भोलू किस तरह वहां से भागे कि पकड़ में न आने पाये। सारी रात वह यही सोचता रहा। समस्याएं कई थीं। दरवाजे पर चौकीदार बैठा रहता था। उसे पार करना आसान नहीं था। उसके पास बंदूक थी। फिर नयी मोटरसाइकिल भी चाहिए थी जो सिर्फ रिंगमास्टर के पास थी। उसे लेना आसान काम नहीं था। इसके अलावा गोलू को यह भी पता नहीं था कि भोलू का घर कहां है और कितनी दूर है। गोलू को एक बात तो समझ में आ ही गयी कि अगर स्वतंत्र होना है तो भोलू को थोड़ा खतरा तो मोल लेना ही पड़ेगा।

अगले दिन गोलू ने सर्कस के चारों ओर बनी चारदीवारी का निरीक्षण किया। चारदीवारी लकड़ी के खंभों पर टीन की चादरें ठोककर बनायी गयी थी। एक जगह चादरें ढीली लगीं। उसने जरा जोर लगाया। पेचकस से कसे पेच बाहर को आने लगे। उसने चुपचाप पेचों को वैसे ही लगा दिया। वह समझ गया कि पेचकस से चादरों को खोला जा सकता है। इससे इतना बड़ा रास्ता बन जायेगा कि भोलू तो भोलू, मोटरसाइकिल भी बाहर निकल जाये।

फिर उसे ख्याल आया कि भोलू तो मोटरसाइकिल स्टार्ट करना नहीं जानता। सर्कस में भी उसे मोटरसाइकिल स्टार्ट कर के दी जाती है, तब कहीं



वह चला पाता है। गोलू के बस की तो मोटरसाइकिल थी ही नहीं। वह तो उस पर सिर्फ सपने में और वह भी मोलू के साथ ही बैठा था। अब क्या हो ?

उसने सोचा, 'मुझे तो कोई मोटरसाइकिल चलाने नहीं देगा। बस, यही कर सकता हूं कि गौर से देखूं कि रिंगमास्टर अपनी मोटरसाइकिल कैसे चलाता है।'

वह घूमता घूमता वहीं जा पहुंचा, जहां रिंगमास्टर की मोटरसाइकिल खड़ी थी। चौकीदार उसे साफ कर रहा था।

उसने पूछा, "चौकीदार काका, आप क्या कर रहे हैं?"

"बेटा, साहब कहीं बाहर जा रहे हैं। इसलिए मोटरसाइकिल साफ कर रहा हूं।"

"कब जायेंगे ?" गोलू ने पूछा।

"लगता है, जाने ही वाले हैं।"

"अच्छा काका, तुम्हें पता है मोटरसाइकिल कैसे चलती है ?" गोलू ने यों ही पूछा।

"बेटा, मैंने तो कभी भी नहीं चलायी। हां, चलाते हुए देखा जरूर है। इसमें एक चाबी लगती है। फिर ऐसे किक मारी जाती है।" चौकीदार ने किक

मारकर उसे दिखला दी।

"पर यह चल तो नहीं रही है ?" गोलू ने पूछा।

"मैंने बताया न कि इसमें एक चाबी लगती है। तब यह चलती है।"

"चाबी कहां लगती है ?" उसने फिर प्रश्न किया।

चौकीदार ने चाबी की जगह बता दी।

"चाबी कहां है ?"उसने फिर पूछा।

"चाबी तो साहब के पास है। तुम कभी गये हो उनके तंबू में? वो बीच का खंभा है न, उसी पर एक कील से लटकी रहती है।"

"काका, एक बार मैं चलाकर देखूं ?" उसने पूछा।

"अरे भई, साहब आने वाले हैं। नाराज होंगे। फिर तू अभी छोटा भी तो है। जब बड़ा हो जायेगा तो अपने लिए मोटरसाइकिल ले लेना। उसे चलाना। इतनी बड़ी मोटरसाइकिल है। कहीं तेरे ऊपर गिर गयी तो मुश्किल हो जायेगी।"

"काका, बस एक बार किक मारकर देखूंगा। सिर्फ एक बार, बस।"

"नहीं, साहब आ गये तो दोनों को ही डांटेंगे।"

"बस एक बार", उसने फिर मिन्नत की।

"देख, जिद्द ठीक नहीं होती", चौकीदार ने समझाने की कोशिश की। वह उदास हो चुपचाप मोटरसाइकिल को देखने लगा।

चौकीदार को अंततः दया आ गयी, "अच्छा, जल्दी से एक किक मार ले।"

चौकीदार ने किक सीधी कर दी। पहली बार तो वह गोलू से दबी ही नहीं, पर थोड़ी देर बाद वह किक को किसी तरह दबाने में सफल हो गया।

चौकीदार की नजर लगातार रिंगमास्टर के तंबू की ओर ही थी। अचानक चौकीदार ने उसे मोटरसाइकिल से अलग कर दिया। रिंगमास्टर आ रहा था। उसके हाथ में एक लाल हैल्मेट था। उसने हैल्मेट पहना, चाबी लगायी, किक मारी और मोटरसाइकिल देखते ही देखते सर्कस के अहाते से बाहर निकल भीड़ में खो गयी।

गोलू थोड़ी देर इधर उधर घूमा और फिर रिंगमास्टर के तंबू के नजदीक जाकर बैठ गया। रिंगमास्टर जल्दी ही लौटा। उसने मोटरसाइकिल खड़ी की। हैल्मेट उतारा, चाबी निकाली। चाबी एक जंजीर से बंधी थी। वह चाबी को उंगली पर नचाता अपने तंबू में चला गया। गोलू तंबू के पीछे जाकर एक

छेद से देखने लगा। रिंगमास्टर ने एक मेज पर अपना हैल्मेट रखा और वहीं सामने वाले खंभे पर चाबी लटका दी।

गोलू वहां से दौड़ता हुआ भोलू के पास पहुंचा और उसने भोलू को अपनी सारी योजना समझा दी।

भोलू उसकी योजना सुनकर धक्क रह गया। पर गोलू ने उसे समझाया, "देखो, डरने से काम नहीं चलेगा। जो मैं कह रहा हूं बस वह किये जाओ। चिंता बिल्कुल मत करो।"

जाते जाते वह लौटकर आया और बोला, "भोलू सुनो! अब कोई गलती न करना। दिल लगाकर काम करना, सावधानी से। समझे!"

उसके बाद सारा दिन गोलू उसी उधेड़बुन में लगा रहा। रात सोते समय उसने अपने बापू से पूछा, "बापू! यह भोलू आया कहां से ? इसके मां-बाप कहां हैं ?"

उसके बापू बतलाने लगे, "यह लंबी कहानी है। एक बार हमारा सर्कस काशीपुर में लगा हुआ था। काशीपुर शहर हिमालय की तराई में है। वहां से थोड़ी दूर पहाड़ शुरू हो जाते हैं। पहाड़ों में घने जंगल हैं।"

"जंगलों में जानवर भी होते हैं ?" गोलू ने पूछा।

"हां, हर तरह के जानवर होते हैं जैसे शेर, हाथी, भालू, हिरन आदि। एक दिन अपना रिंगमास्टर जीप में उधर जंगल की ओर गया। आते समय ही जंगल में चुपके से इस भालू के बच्चे को पकड़ लाया। तब यह बहुत छोटा था।"

"यह कब की बात है ?"

"साल-डेढ़ साल पहले की", उसके बापू ने समझाया।

गोलू कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला, "बापू काशीपुर से जंगल कितनी दूरी पर है ?"

"यही कोई पंद्रह-बीस किलोमीटर।"

"और यहां से काशीपुर कितनी दूर है ?" गोलू ने फिर पूछा।

"यहां से ज्यादा दूर नहीं है। होगा कोई पचास-साठ किलोमीटर", बापू ने जवाब दिया।

"किस ओर ?" गोलू ने फिर पूछा।

"किस ओर ?" उन्हें नींद आ रही थी। "तुझे इससे क्या लेना देना ?

तुझे वहां जाना है क्या ?" पिता उसके प्रश्नों से परेशान होने लगे थे।

"बताओ न बापू। यों ही पूछ रहा हूं", गोलू बोला।

उन्होंने थोड़ा सोचा फिर बोले, "दिशा तो उत्तर ही है। पर दिशा का क्या करना है। ये सामनेवाली सड़क सीधे काशीपुर जाती है। वहां से आगे पहाड़ों की ओर निकल जाती है।"

गोलू की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसने तय किया, कल रात वह भोलू को मुक्त कर देगा। सब ठीक रहा तो अगले दिन भोलू अपने माता-पिता के पास पहुंच जायेगा। इस विचार मात्र से उसे बहुत संतोष मिला।

उस रात वह खूब गहरी नींद सोया।

अगले दिन सबेरे से ही हल्के बादल छाये हुए थे।

हर रोज की तरह वह सारा दिन व्यस्त रहा। उसने जितनी बार हो सका, बीच बीच में मोटरसाइकिल की जांच परख की। सर्कस के मुख्य द्वार के सामने एक चाय वाला अपनी रेहड़ी लगाता था। गोलू एक बार उसके पास भी हो आया। चाय वाले ने भी यही बताया कि काशीपुर को यह रास्ता सीधा जाता है।

"वहां से आगे जंगल को भी जाता है न ?" गोलू ने फिर पूछा था।

"मैं तो कभी नहीं गया पर हां, सुना है वहां से पहाड़ नजदीक ही हैं। वहां बड़े जंगल हैं", चाय वाले ने कहा।

जब सब पक्का हो गया तो वह भोलू के पास पहुंचा। गोलू ने उसे फिर से सारी योजना कई कई बार समझायी। पर गोलू को लगा, भोलू बहुत ही घबराया हुआ है।

उसकी घबराहट देख गोलू को अंततः गुस्सा आ गया।

"हिम्मत से काम लो।" गोलू ने उसे डांट पिलायी, "अपने मां-बाप के पास जाना है या नहीं ? डरते रहोगे तो इसी तरह नाक में नकेल पड़ी रहेगी। रोज शाम को हंटर के इशारे पर नाचोगे। सारी जिंदगी इसी खूंटे से बंधे बंधे कट जायेगी, समझे!"

भोलू पर डांट का थोड़ा असर हुआ। उसने अपने को संभाला।

"अब सो जाओ सारी रात सो नहीं पाओगे। जितना हो सके, अभी आराम कर लो", कहकर गोलू भी अपने तंबू की ओर चल पड़ा।

उस रात की बात

सर्कस का आखिरी शो चल रहा था। गोलू थोड़ी देर पंडाल में बैठा। जब उसने देखा कि सब अपने अपने काम में व्यस्त हो चुके हैं तो वह चुपके से खिसक आया। उसकी ओर ध्यान देने की फुर्सत ही किसे थी।

वह सीधा रिंगमास्टर के तंबू की ओर चल पड़ा। आसपास सन्नाटा था। चौकीदार का सारा ध्यान सामने की ओर दर्शकों पर था। वह तंबू का पर्दा उठाकर सीधा अंदर चला गया। वहां रोशनी नहीं थी, पर बाहर लगे बल्बों से इतना प्रकाश आ रहा था कि उसे सामने खंभे पर लटकी हुई मोटरसाइकिल की चाबी देखने में कठिनाई नहीं हुई। हैल्मेट भी मेज पर रखा हुआ था। दोनों चीजों को उठा वह बाहर आ गया। चाबी उसने वहीं मोटरसाइकिल पर लगा दी और हैल्मेट को साथ ही जमीन पर रख दिया।

गोलू वहां से चारदिवारी के पास पहुंचा। ढीले पेचवाली टीन की चादरों को पहचानने में उसे देर नहीं लगी। पेचकस उसे नहीं मिल पाया था उसकी जगह वह एक छोटा चाकू ले आया था। उसने चाकू से पेचों को इतना ढीला कर दिया कि बाद में आसानी से हाथ से ही निकाले जा सके।

सर्कस के खत्म होते ही सब लोग अपने अपने तंबुओं में आ गये। लोगों ने खाना खाया। दिन भर के थके थे ही। एक के बाद एक बत्तियां गुल होती गयीं और देखते ही देखते सब सो गये। जब गोलू को पूरा विश्वास हो गया कि अब कोई जगा नहीं रह गया है, वह पंजों के बल चलता हुआ भोलू के पास पहुंचा। भोलू उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। गोलू ने उसे खोल दिया। भोलू ने जैसे ही कदम उठाया, घुंघरू

बज उठे। गोलू ने रोककर फौरन उसके घुंघरू खोल दिये।

सवेरे के हल्के बादल अब तक घनघोर घटा में बदल गये थे। इससे अंधेरा गहरा गया था। हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था। भोलू आगे चला। गोलू पीछे पीछे। फिर भी गोलू जगह जगह ठोकर खा रहा था। अंततः भोलू ने उसका हाथ थाम लिया। टैंटों के अंधेरे में छुपते छुपाते दोनों चारदीवारी के उस कोने में पहुंचे जहां गोलू सर्कस के शो के दौरान आकर टीन के पेच ढीले कर गया था। गोलू को पेच निकालने में देर नहीं लगी। फिर दोनों ने बिना आवाज किये टीन की एक चादर निकाल कर किनारे रख दी। इसी तरह उन्होंने दूसरी टीन की चादर निकाली। अब सामने सड़क नजर आने लगी थी। गोलू बाहर गया। चारों ओर नजर दौड़ायी, कहीं कोई है तो नहीं ?

बाहर सिर्फ सन्नाटा था। कुछ दूरी पर सड़क के खंभों पर बल्ब जल रहे थे। पर सर्कस के आसपास लगभग अंधेरा था। यही वे चाहते भी थे। अब मोटरसाइकिल लानी बाकी थी।

गोलू ने हैंडिल पकड़कर जोर लगाया, पर मोटरसाइकिल को स्टैंड से उतार नहीं पाया। उसने फिर जोर लगाया। इस बार मोटरसाइकिल हिली तो, पर स्टैंड से उतरी अब भी नहीं। अब भोलू भी चुप नहीं रह सका। जैसे ही गोलू ने हैंडिल धकेला, भोलू ने पीछे से पूरा जोर लगाया। इस बार मोटरसाइकिल केवल जोर से हिली ही नहीं बल्कि खट की आवाज करती हुई स्टैंड से उतर गयी।

मोटरसाइकिल यकायक उतरी तो गोलू उसे संभाल नहीं पाया और वह गिरने लगी। गोलू दबा जा रहा था। भोलू ने तुरंत पूरा जोर लगाकर मोटरसाइकिल को अपनी ओर खींचा और उसे गिरने से बचा लिया। इस खींचतान से इतनी आवाज हुई कि वे दोनों डर गये। कुछ देर दोनों की जैसे सांस ही रुक गयी। कहीं किसी ने आवाज सुन तो नहीं ली ? पर सौभाग्य से लोग इतने थके हुए थे कि किसी को कुछ पता नहीं चला।

हां, दरवाजे पर बैठे चौकीदार को थोड़ा शक जरूर हुआ। उसने चौंककर इधर उधर देखा, पर सब शांत पाया। हो सकता है, सपने में कुछ देखा हो, उसने सोचा। वैसे ये जानवर भी कम बदमाश नहीं हैं, उसने अपने आप से कहा। खट्ट पट्ट करते ही रहते हैं। ठंड हो रही थी। उसने अपना कंबल कसकर लपेटा और फिर से ऊंघने लगा।

अब भोलू ने मोटरसाइकिल संभाली। उससे भी वह ठीक से नहीं संभल रही थी। किसी तरह दोनों ने मिलकर मोटरसाइकिल को ठेलना शुरू किया और तब तक ठेलते चले गये जब तक गोलू को यकीन नहीं हो गया कि अब मोटरसाइकिल के चलने की आवाज कोई नहीं सुन पायेगा। दूर जाकर गोलू ने किक मारनी शुरू की। वह किक मारता मारता थक गया, पर मोटरसाइकिल थी कि स्टार्ट नहीं हो रही थी। अचानक भोलू को याद आया कि अक्सर चलाने से पहले रिंगमास्टर मोटरसाइकिल में नीचे लगी एक घुंडी घुमाया करता है। भोलू ने ढूंढ़ा तो पाया कि बायीं ओर टंकी के नीचे सचमुच एक घुंडी लगी है। भोलू ने घुंडी घुमा दी। इससे पैट्रोल खुल गया और इस बार जब गोलू ने किक मारी तो मोटरसाइकिल घर्र घर्र कर के थोड़ी ही देर में स्टार्ट हो गयी।

गोलू अपने बापू की एक कमीज साथ लाया था। वह उसने भोलू को पहना दी। उसने हैल्मेट ढूंढ़ा पर हैल्मेट पीछे छूट गया था। अब ? गोलू की समझ में नहीं आया कि क्या करे ? हैल्मेट तो होना चाहिए, उसने सोचा। वरना लोग भोलू को दूर से ही पहचान लेंगे और पीछे पड़ जायेंगे। उसने मोटरसाइकिल बंद करनी चाही पर वह बंद नहीं हो पायी। अंततः गोलू ने मोटरसाइकिल भोलू को थमाई और "अभी आता हूं" कहकर सर्कस की ओर दौड़ लिया।

भोलू बहुत घबराया हुआ था। वह नहीं चाहता था कि गोलू उसे छोड़कर कहीं जाये। पर गोलू तो अब तक वापस सर्कस के अहाते में घुस चुका था। कुछ घबराहट और कुछ ठंड से भोलू के हाथ-पैर कांपने लगे। भगवान का नाम जपता वह गोलू का इंतजार करने लगा।

गोलू ने देर नहीं लगायी। जब वह लौटा तो यह देखकर घबरा गया कि भोलू से मोटरसाइकिल गिर गयी थी और वह उसे सीधा करने में लगा हुआ था।

गोलू हैल्मेट किनारे पर रख भोलू की मदद को लपका। जल्दी ही मोटरसाइकिल खड़ी हो गयी। वह अभी भी चल रही थी, घर्र घर्र, घर्र घर्र। गोलू ने संतोष की सांस ली।

गोलू ने धीरे धीरे कहा, "घबराओ नहीं। तुम तो मोटरसाइकिल चलाना जानते हो। यह क्या कर रहे हो। कसकर पकड़ो।"

मोटरसाइकिल भोलू को पकड़ाकर उसने लपककर हैल्मेट उठाया और

भोलू को पहनाना चाहा। पर तभी उसे याद आया कि भोलू की नाक में तो अभी भी नकेल पड़ी है। मुंह चमड़े के पट्टे से बंधा है। उसने जल्दी से जेब से चाकू निकाल कर भोलू की नकेल काट दी। फिर सावधानी से चमड़े का पट्टा भी काट दिया। भोलू को पहली बार यकीन हुआ कि वह आजाद होने जा रहा है।

गोलू ने भोलू को हैल्मेट पहना दिया। अब वह किसी आदमी से कम नहीं लग रहा था। हैल्मेट से भोलू को थोड़ी असुविधा हो रही थी। इस बार गोलू ने समझाया, "इससे तुम्हें कोई आसानी से पहचान नहीं पायेगा। लोग सोचेंगे कोई आदमी जा रहा है। फिर मान लो कहीं गिर गये तो इससे तुम्हें चोट नहीं आयेगी। हैल्मेट पहनना अच्छा होता है।"

भोलू सिर्फ सिर हिला रहा था।

अंततः गोलू ने भोलू को किसी तरह मोटरसाइकिल पर बैठाया। गोलू उससे गले मिला। भोलू की पीठ थपथपाई और बोला, "अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना..."

गोलू और भी बहुत कुछ कहना चाहता था। पर उसका गला भर आया था। वह इस बात को भोलू पर जाहिर नहीं होने देना चाहता था। किसी तरह उसने आंसुओं को रोके रखा।

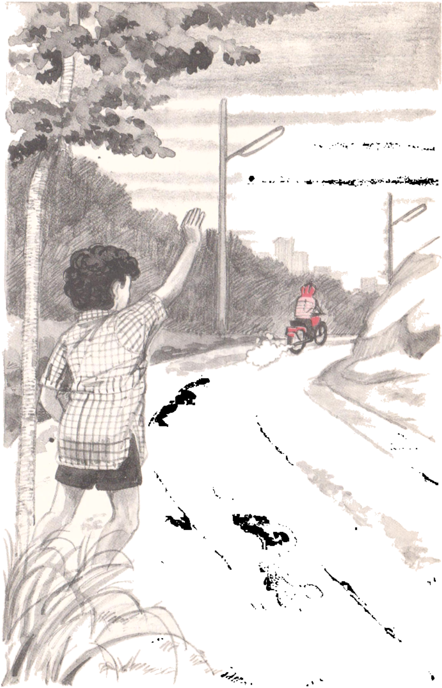
"चलाओ", गोलू ने कहा। "अब समय नहीं है।"

भोलू ने क्लच दबाकर हिलाया। गीयर एक पर आया। धीरे धीरे क्लच छूटने के साथ ही मोटरसाइकिल सरकने लगी। गोलू मोटरसाइकिल के साथ दौड़ा। उसने भोलू की पीठ एक बार फिर थपथपाते हुए कहा, "अपना ध्यान रखना। तेजी से जाना। कहीं रुकना मत। यह सड़क सीधी जाती है पहाड़ों तक। फिर मिलेंगे।" और गोलू रुक गया।

उसने अंधेरे में देखा कि भोलू की गर्दन "हां" में हिली है। गोलू उसे जाता देखता रहा। थोड़ी ही देर में मोटरसाइकिल भोलू समेत अंधेरे में गुम हो गयी।

गोलू को प्रसन्नता भी थी और दुख भी। उसका दोस्त चला गया था। शायद अब कभी मिलेगा भी नहीं। उसे रोना आने लगा। थोड़ी देर वह सुबकता रहा। फिर उसने अपने आंसू पोंछे और लौट पड़ा।

वह बिस्तर में आकर लेट गया। बादल गरजने लगे थे। बिजली चमक



रही थी। वर्षा के आसार बढ़ रहे थे। गोलू मन ही मन प्रार्थना करने लगा। भगवान तब तक वर्षा न करना जब तक भोलू अपने घर न पहुंच जाये। वह दिन भर का थका हुआ था इसलिए ज्यादा देर जगा नहीं रह सका। उसे पता नहीं चला कि कब बूंदा बांदी वर्षा में बदल गयी।



भोलू न जाने कितनी दूर तक चलता चला गया। घने अंधकार और वर्षा से उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। न जाने वह किधर जा रहा था। रिंगमास्टर का भय उसके मन में गहरे तक बैठा हुआ था। मोटरसाइकिल चलाते चलाते कमर दुखने लगी थी। उंगलियां दर्द कर रही थीं, पर वह चलता चला गया था। अंततः मोटरसाइकिल ने ही चलना बंद कर दिया। उसने किसी तरह मोटरसाइकिल किनारे लगायी और किक मारने की कोशिश करने लगा। घबराहट में पहले तो किक ही नहीं लगी जब किसी तरह लगी भी तो मोटरसाइकिल चली ही नहीं।

हारकर उसने मोटरसाइकिल वहीं पटक दी। वर्षा हल्की हो गयी थी पर बूंदा बांदी जारी थी। वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। हताशा, थकान और घबराहट से उसे रोना आने लगा। वह खुद को ही कोसने लगा। उसे क्या दुर्बुद्धि आयी कि वहां से भाग पड़ा। अब कहां जाये ? न उसे अपने माता-पिता का नाम याद था, न ही घर का पता। यहां तक उनकी शक्ल भी वह भूल चुका था। वह जानता था सर्कस में लौटा तो रिंगमास्टर छोड़ेगा नहीं। मारते मारते खाल उधेड़ देगा। उसे कल्पना मात्र से डर लगने लगा। किसी और जगह के बारे में वह जानता नहीं था, इसलिए और कहीं जा नहीं सकता था।

साथ में अगर गोलू होता तो यह परेशानी तो न होती। वह खुद तो किसी से बात भी नहीं कर सकता। उसे आदमियों की तरह बोलना नहीं आता है। किससे रास्ता पूछे ? न पूछे तो किस रास्ते पर जाये ? उसे गोलू याद आने लगा। उसे एक और चिंता सताने लगी सुबह की। उजाला होते ही वह पहचान

लिया जायेगा। सबसे बड़ी समस्या मोटरसाइकिल की थी। आदमी भालू को मोटरसाइकिल के साथ देखकर भड़केंगे। उन्हें समझते देर नहीं लगेगी कि हो न हो यह भालू किसी सर्कस से भागा हुआ है। तब वे उसे पकड़कर वापस रिंगमास्टर के हवाले कर देंगे। सुबह होने में शायद अब देर भी नहीं थी।

वह रोने लगा। पहले धीरे धीरे, फिर जोर जोर से।

जिस पेड़ के नीचे भोलू बैठा था, वह एक चौड़े पत्तों वाला खूब हरा भरा पेड़ था। वर्षा से बचने के लिए इसी पेड़ की बीच की डाल पर एक चिड़िया सो रही थी। वह बहुत दूर से उड़ती आ रही थी। लगातार उड़ने से बहुत थक गयी थी, पर भोलू के रोने से उसकी नींद उचट गयी। वैसे उसने मोटरसाइकिल को रुकते तो देखा था। तब उसने सोचा था, कोई आदमी है, जो वर्षा से बचने के लिए शरण ले रहा है। भोलू हैल्मेट ही नहीं कमीज भी पहने था। इसलिए उसे अंधेरे में पहचान पाना नामुमकिन था। पर जब वह रोने लगा तो चिड़िया को शक हुआ। यह कैसा आदमी है, जो जानवर की तरह रो रहा है ?

वह अपनी उत्सुकता दबा न सकी। आखिर माजरा क्या है ? अगर यह आदमी नहीं है तो मोटरसाइकिल पर कैसे आया है ? उसने नीचे झांका, यहां कुछ स्पष्ट नजर नहीं आया। नींद और थकान के कारण उसकी हिम्मत नहीं हुई कि नीचे जाकर देख आये। जो हो रहा है होने दो, सुबह देखूंगी, सोचकर उसने आंखें बंद कर लीं।

पर भोलू का रोना रुकने की जगह बढ़ता जा रहा था। चिड़िया की नींद में इससे खलल पड़ रही थी। उसके लिए सोना मुश्किल हो गया। अंततः उसने जम्हाई ली। पर पड़फड़ाये। पैर सीधे किये और फुर्र से नीचे जा पहुंची।

अचानक उसकी समझ में कुछ नहीं आया। लगा, कोई आदमी ही है। वह घुटनों में सिर रखकर रो रहा था। चिड़िया वापस अपनी जगह पर आकर बैठ गयी। रोना अब भी जारी था, पर स्वर आदमी का नहीं था। आखिर हो क्या रहा है ? उत्सुकता ने उसे बेचैन कर दिया। वह फिर से उड़कर नीचे जा पहुंची।

इस बार उसने ध्यान से देखा। वह दंग रह गयी। भालू का बच्चा आदमियों के कपड़े पहने था। बगल में हैल्मेट रखे वह लगातार रो रहा था। चिड़िया को लगा, वह सपना तो नहीं देख रही है ? क्या यह संभव है ? उसने पैर पर चोंच मारी। नहीं, वह सो नहीं रही थी। यह सपना भी नहीं था। जो



वह देख रही थी, सच था। उसने किसी तरह हिम्मत करके पूछ ही लिया, "अरे भई, रो क्यों रहे हो ? तुम भालू ही हो न ?" अब तो भोलू और भी जोर से रोने लगा।

चिड़िया घबरायी, "अरे, अरे चुप हो जाओ। रोते क्यों हो? हुआ क्या है?"

पर भोलू का रोना था कि थम ही नहीं रहा था। पहले तो चिड़िया की समझ में ही नहीं आया कि भोलू को किस तरह से चुप कराये। अंततः उसे एक तरकीब सूझी। वह ठीक भोलू के सामने आयी और मटक मटक कर नाचने लगी। उसने तुरत फुरत एक गाना भी बना दिया :

पहन टोप तुम आये हो
मोटरसाइकिल लाये हो।
लगते चाहे मोटे हो
पर नटखट और छोटे हो।

कुछ है जिसे छिपाते हो
यों आंसू जो बहाते हो।
क्या पापा ने मारा था
मम्मी ने फटकारा था ?

या गर्जन से डरते हो
जो लंबी सिसकी भरते हो।
घर की याद सताती है
मां ही अभी सुलाती है
बोतल से दूध पिलाती है ?

पर इतने छोटे न बना
हम से भी कुछ कहो सुनो।
दुख कहने से बंटता है
कठिन समय यों कटता है।

गीत सुनकर भोलू को रोते रोते भी हंसी आ गयी। चिड़िया भी टिब्-टिब् करके हंसने लगी।

उसने ने फौरन अपना परिचय दिया, "मैं नवरंग चिड़िया हूं। मुझे पित्ता

भी कहते हैं। तुम तो खैर भालू हो ही। लगता है पहाड़ी हो। पर तुम हो कारीगर। मैंने तो किसी भालू को पहली बार मोटरसाइकिल चलाते हुए देखा है। वह भी इतना छोटा भालू।"

चिड़िया बातूनी थी ही, उसने भोलू की खूब तारीफ की। पर भोलू चुप रहा।

"हां तो बताओ", चिड़िया फिर बोलने लगी। "तुमने मोटरसाइकिल कैसे सीखी ? अच्छा छोड़ो।" उसने बात बदली, "पहले यह बतलाओ, तुम रो क्यों रहे हो ?"

यह सुनते ही भोलू फिर रोने लगा। चिड़िया फुदककर उसके कंधे पर आ बैठी और उसे अपनी चोंच से पुचकारते हुए बोली, "देखो, अच्छे बच्चे रोते नहीं हैं। फिलहाल थोड़ी देर के लिए ही सही, चुप हो जाओ। पहले यह बताओ तुम्हें हुआ क्या है ? हो सकता है, मैं तुम्हारी कुछ मदद कर पाऊं।"

पर भोलू सोच रहा था, यह चिड़िया इतनी छोटी सी है, मेरी क्या मदद करेगी। इसे क्या पता कि मेरा दुश्मन रिंगमास्टर है। उससे बड़े बड़े शेर और हाथी तक डरते हैं। वह कुछ नहीं बोला, बस रोता ही चला गया।

कई बार अनुरोध करने पर भी जब वह कुछ नहीं बोला तो चिड़िया को थोड़ा गुस्सा आ गया। बोली, "तुम्हारी मर्जी है, मत बताओ। तुम्हें लगता होगा, मैं इतनी छोटी हूं, किस काम आ सकती हूं। क्यों है न ? माना, मैं किसी काम की नहीं हूं पर बात बताने में क्या हर्ज है ? इससे और कुछ हो न हो, तुम्हारा मन ही हल्का हो जायेगा।"

भोलू अब भी कुछ नहीं बोला।

चिड़िया बोली, "अच्छा भई, कम से कम रोना तो बंद कर दो। मैं सोने जा रही हूं। कल मुझे पहाड़ों में पहुंचना है। तुम्हारे रोने से मुझे नींद नहीं आ रही है। और अगर तुम्हारे लिए रोना इतना ही जरूरी है तो बेहतर है कि सामनेवाले पेड़ के नीचे बैठकर रोओ।"

चिड़िया मुड़कर जाने ही वाली थी कि भोलू बोल उठा, "तुमने क्या कहा ? कहां जाना है ?"

"मुझे जाना है, पहाड़ों की ओर। क्या समझे? और कल शाम तक पहुंचना है। अगर मैं सोऊंगी नहीं तो फिर दिन भर उड़ूंगी कैसे?"

"जाना तो मुझे भी वहीं है", भोलू ने सिसकते हुए कहा।

चिड़िया बोली, "पहले तुम अपना रोना बंद करो। फिर यह बताओ कि तुम्हारी समस्या क्या है ?"

इस बार भोलू ने सारी कहानी बता दी कि किस तरह उसे बचपन में सर्कस वाले जंगल से उठा लाये थे, किस तरह उसे सिखाया गया, किस तरह उसे बात बात पर मार पड़ती थी, किस तरह गोलू ने उसकी भागने में मदद की, और उस जंगल का रास्ता बताया जहां से उसे बचपन में रिंगमास्टर उठा लाया था।

सारी बात सुनकर चिड़िया बोली, "घबराओ मत। तुम जिस जंगल की बात कर रहे हो , मैं वहीं जा रही हूं। तुम निश्चिंत रहो और अगर मुझ पर विश्वास कर सकते हो तो समझ लो कि तुम्हें वहां पहुंचाना मेरा काम है। अब तुम रोना बंद कर दो।"

"पर तुम्हें रास्ता तो मालूम है न ?" भोलू को उसकी बात पर अब भी यकीन नहीं हुआ।

"क्यों नहीं! अच्छी तरह से। मैं पैदा ही वहीं हुई हूं", चिड़िया ने उसे आश्वस्त करने की कोशिश की।

"तो तुम यहां क्या कर रही हो ?" भोलू को उसकी बात पर यकीन नहीं आ रहा था। उसे लगा, यह भी रास्ता भूली हुई है, भटककर यहां पहुंच गयी होगी।

"मैं यहां क्या कर रही हूं ? अरे, मैं भी पहाड़ों की तरफ जा रही हूं। थक गयी तो आराम करने बैठ गयी", चिड़िया ने चिढ़कर उत्तर दिया।

"तो तुम आ कहां से रही हो ?" भोलू ने फिर पूछा।

"दक्षिण से", चिड़िया ने कहा।

"दक्षिण माने ?" भोलू की समझ में नहीं आया।

"दक्षिण, जहां समुद्र है। अगर तुम पहाड़ों की ओर जाने की जगह ठीक उल्टी दिशा में चले जाओ तो कई दिन बाद उड़ते उड़ते जहां पहुंचोगे, वहीं दक्षिण होगा।"

"अच्छा यह समुद्र क्या होता है ?" भोलू अपनी चिंता भूल, चिड़िया की बातों में रम गया।

"समुद्र माने, जहां पानी ही पानी होता है। जहां तक देखोगे, सिर्फ पानी ही पानी नजर आयेगा।"

"नदी से भी ज्यादा ?" भोलू ने पूछा।

"नदी से कई गुणा ज्यादा। हम कई दिन तक उड़ते चले जाते हैं पर पानी खत्म नहीं होता।"

"तुम वहां क्या करने गयी थीं ?"

"अब तुम्हें पहुंचना भी है या पूछताछ ही करे चले जाओगे ?" चिड़िया ने मुस्कराते हुए कहा।

अब भोलू घबराया, "अरे हां भई, हां। बताओ न कैसे चलेंगे ? अब तो बस सुबह होने ही वाली है। अब क्या करेंगे ?"

चिड़िया को लगा भोलू फिर से रोने लगेगा। वह बोली, "तुम घबराओ मत, मुझे जरा सोचने दो।"

चिड़िया सोचने लगी। भोलू बेचैन सा उसका मुंह देख रहा था। यद्यपि उसे चिड़िया पर कोई बहुत यकीन नहीं हो पा रहा था, पर डूबते को तिनके का सहारा तो था ही।

चिड़िया बोली, "देखो, रास्ता तो सीधा है। यहां से काशीपुर दूर नहीं है। सुबह होने से पहले ही हम शहर पार कर सकते हैं। मैं तुम्हारी मोटरसाइकिल के साथ साथ चलूंगी। सवेरा होते ही मोटरसाइकिल कहीं रखकर तुम भी छिप जाना। मैं पास ही किसी पेड़ पर बैठकर चौकसी करती रहूंगी। कोई आया तो तुम्हें एकदम बता दूंगी। तुम सावधान हो जाना।"

"अरे, तुम सुनोगी भी या नहीं", भोलू झल्लाया। "देख नहीं रही हो, मोटरसाइकिल तो चल ही नहीं रही है। वह चलती तो फिर बात ही क्या थी।"

"क्यों, क्या हो गया", चिड़िया ने पूछा।

"क्या पता, क्या हो गया है ?" भोलू ने खिन्न मन से कहा।

"तब तो कुछ और सोचना पड़ेगा ?" चिड़िया फिर से सोचने लगी।

अब तक भोलू की घबराहट बहुत बढ़ चुकी थी। उसने गुस्से में कहा, "अब तुम सोचती ही रहोगी या कुछ करोगी भी। सवेरा होने को है। अभी आदमी निकलने लगेंगे। सर्कस वाले भी आ जायेंगे और मुझे पहचान लेंगे। तुम्हारा क्या है ? तुम तो पेड़ पर जाकर बैठ जाओगी। पकड़ा तो मैं जाऊंगा।"

चिड़िया को उसकी घबराहट देखकर हंसी आ गयी। बोली, "अच्छा ठीक है। मैं ज्यादा नहीं सोचूंगी। अब बताती हूं।"

"जल्दी बताओ न, क्या बता रही हो ?" भोलू बेचैनी में खड़ा हो गया।

"सबसे पहले तुम मोटरसाइकिल को सड़क से दूर कर दो, जिससे यह किसी को नजर न आये। अगर सर्कस वाले आये तो भी उन्हें आसानी से पता नहीं चलेगा कि भालू इसी तरफ गया है।"

"अच्छा ठीक है", कहकर भोलू ने मोटरसाइकिल का पहिया पकड़कर घसीटना शुरू कर दिया।

"अरे इसे उठा कर ले जाओ न", चिड़िया बोली।

भोलू चुपचाप मोटरसाइकिल घसीटता रहा, और उसे एक झाड़ी के पीछे करके ही दम लिया।

चिड़िया फिर बोली, "तुम इतना घबरा क्यों रहे हो। जरा धैर्य से काम लो। अभी सुबह होने में देर है।"

"तुम नहीं समझ सकतीं", भोलू चिढ़कर बोला। "यह मोटरसाइकिल कितनी बड़ी आफत है। इसे सीधा करना आसान काम नहीं है।"

चिड़िया की चुप्पी देख उसने कहा, "अच्छा, अब बताओ, आगे क्या करना है ?"

"अब तुम्हें सड़क से थोड़ी दूर, कच्चे में चलना है। इससे कोई तुम्हें देख नहीं पायेगा। मैं थोड़ा आगे आगे चलूंगी। कोई खतरा हुआ तो जोर से दो बार आवाज दूंगी -- टिब-टिब।" इस तरह से चिड़िया ने सीटी बजाकर दिखला दी। "तुम जहां जगह मिले, फौरन छिप जाना। जब खतरा टल जायेगा मैं फिर यही आवाज निकालूंगी --सिर्फ एक बार। तुम आगे बढ़ना शुरू कर देना। समझ गये न!"

भोलू ने सिर हिलाया, "हां, समझ गया।"

दोनों चल पड़े। भोलू सड़क से दूर चल रहा था और नवरंग चिड़िया सड़क के समानांतर थोड़ी ऊंचाई पर आगे आगे जा रही थी।

बादलों के कारण अंधेरा घना था। भोलू की अंधेरे में चलने की आदत खत्म हो गयी थी। इससे उसे बहुत कष्ट हो रहा था। ऊपर से उसे चिंता लगी हुई थी कि कहीं चिड़िया ही न गायब हो जाये। एक ही सहारा था। उसे वह गंवाने को तैयार नहीं था। वह चल जमीन पर रहा था, नजर लगातार आकाश में थी। अचानक उसका पैर उलझा। इससे पहले कि संभल पाता, वह छपाक से पानी से भरे एक गड्ढे में जा गिरा।

घबराहट में भोलू की चीख निकल गयी, "बचाओ।"



चिड़िया आगे निकल गयी थी। चीख सुनकर हड़बड़ाती हुई वापस आयी। उसने इधर देखा, उधर देखा, पर कहीं कुछ नजर नहीं आया। उसकी समझ में नहीं आया आखिर भालू गायब कहां हो गया है।

"अरे भई तुम कहां हो मोटरसाइकिल वाले भालू ?" अंततः चिड़िया ने आवाज लगा ही दी।

भोलू इस बीच दो तीन गोते लगा चुका था। ठंड और मुंह में पानी चले जाने के कारण वह उत्तर नहीं दे पा रहा था।

चिड़िया की घबराहट और चिंता इससे और बढ़ गयी। उसने एक के बाद एक पूरे जोर से कई आवाजें लगा दीं, "अरे कहां हो भई ? ओ भालू, ओ मोटरसाइकिल वाले भालू।"

चिड़िया की आवाज दूर दूर तक ही नहीं गयी, बल्कि रात के सन्नाटे में देर तक गूंजती भी रही।

चिड़िया की इस चीख पुकार ने भोलू को परेशान कर दिया। उसे लगा चिड़िया इस तरह से हल्ला मचा मचा कर उसे जरूर पकड़वा देगी।

"मैं यहीं हूं", भोलू ने किसी तरह मुंह की मिट्टी थूककर, ठंड से कांपती आवाज में, पूरे जोर से कहा।

चिड़िया को उसके पास पहुंचने में सेकेंड नहीं लगा। भोलू को देखते ही उसे हंसी आ गयी। वह बहुत देर तक हंसती ही रही।

भोलू को मन ही मन उस पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। पर इस समय वह कुछ कर नहीं सकता था। उसे ठंड लग रही थी। वह कीचड़ में भी फंसा हुआ था। वह जितना निकलने की कोशिश करता, उतना ही फंसता जा रहा था।

"अरे, यह क्या हो गया है ?" चिड़िया ने हंसते हुए ही पूछा।

भोलू ने उसकी बात का उत्तर ही नहीं दिया। चिड़िया समझ गयी, भालू को उसका हंसना अच्छा नहीं लगा है।

"मैं माफी मांगती हूं। मुझे हंसना नहीं चाहिए था। असल में तुम भीगकर सिर्फ पतले ही नहीं लग रहे हो, कीचड़ से तुम्हारा रंग भी बदल गया है। तुम ऐसे लग रहे हो, जैसे पानी के बीच में कोई सूखे पेड़ का तना हो। न चाहते हुए भी मुझे हंसी आ गयी। मेरी जगह तुम होते तो तुम भी हंसते। पर अब तुम इस पानी में कब तक खड़े रहोगे? बाहर क्यों नहीं आ रहे हो ?" चिड़िया ने पूछा।

चिड़िया का इतना कहना था कि भोलू के आंसू आ गये।

"निकलूं कैसे ? मेरे चारों पंजे कीचड़ में फंसे हुए हैं।" उसकी रोने जैसी आवाज से चिड़िया को दुख हुआ।

चिड़िया ने फौरन उसके नजदीक आकर देखा। फिर बोली, "घबराओ मत। ऐसा करो, पहले धीरे धीरे पिछले पंजों पर् खड़े हो जाओ। फिर किसी तरह सामने वाले पेड़ की झुकी हुई डाली को पकड़ लो। तुम्हारा हाथ पहुंच जायेगा। काफी नीची है। फिर उसके सहारे बाहर निकल जाओ।"

भोलू उसका कहना मान पिछले पंजों पर खड़ा हो गया। कोशिश करने से पेड़ की एक डाली भी उसके हाथ में आ गयी। वह ज्यादा दूर थी भी नहीं। तरकीब काम कर गयी थी। चिड़िया ठीक कह रही थी। भोलू देखते ही देखते पानी से बाहर आ गया।



भोलू ठंड से कांप रहा था, पर वह रुका नहीं। दोनों पहले की ही तरह चलने लगे। चलने से भोलू की सर्दी कम होने लगी और वह जल्दी ही सामान्य हो गया।

उसे ध्यान आया, यह चिड़िया है तो अच्छी, पर है कुछ गैर-जिम्मेदार।

अचानक उसने पूछा, "तुम मुझे मोटरसाइकिल वाला भालू क्यों कह रही थीं ? क्या तुम चाहती हो कि मैं पकड़ा जाऊं ?"

"तुम कैसी बात कर रहे हो ?" उसकी बात ने चिड़िया को हैरान कर दिया। "अरे! अगर मैं यह चाहती कि तुम पकड़े जाओ तो तुम्हें रास्ता ही क्यों बताती ?"

"तो तुम मुझे मोटरसाइकिल वाला भालू क्यों कह रही थीं ?" भोलू ने कुछ नाराज होते हुए कहा।

"मुझे तुम्हारा नाम तो पता नहीं है। तुमने बताया ही कहां। मान लो मैं पुकाराती, अरे भई भालू कहां हो ? और तुम्हारी जगह कोई और भालू चला आता तो ? फिर मैं क्या करती ? यहां और भालू भी तो हो सकते हैं।"

"क्यों नहीं ? सारे भालू तो यहीं आ गये हैं। तुम कैसी बातें करती हो। और भालू यहां कहां से आ सकता है ?" भोलू की नाराजगी बनी हुई थी।

"अरे भई, तुम क्या जानो! मैं तो इस रास्ते से आती जाती रहती हूं। जंगल यहां से दूर नहीं है। अक्सर जानवर भटककर आ जाते हैं। भालू तो छोड़ो, एक बार मुझसे यहीं, इसी जगह पर एक बाघ ने रास्ता पूछा था", चिड़िया

दुनिया-जमाने की बातूनी थी। भोलू से कहां मात खाने वाली थी।

"चलो मान लेते हैं कि यहां भालू तो भालू, शेर, बाघ, हाथी सब आते हैं। पर तुम मोटरसाइकिल-मोटरसाइकिल क्या कर रही हो? जानवरों की बात छोड़ो, किसी सर्कस वाले ने मोटरसाइकिल वाला भालू सुन लिया तो समझ लो मेरी शामत आ गयी।"

चिड़िया हंसी, "तुम आखिर हो बच्चे ही। बातें भी वैसी ही करते हो। अरे भई, आदमी कहीं हमारी भाषा समझ सकते हैं ? उन्हें कैसे पता चलेगा कि मैंने क्या कहा ?"

"सर्कस वालों का कुछ पता नहीं", भोलू अपनी बात पर अड़ा रहा। "तुम उन्हें नहीं जानतीं। वे सब कुछ समझ सकते हैं। जंगल का राजा शेर उनके आगे कैसे रहता है, जानती हो ? जैसे जंगल में शेर को देखकर हिरन भी शायद नहीं रहता हो।"

"अच्छा बाबा, कान पकड़ती हूं। अब मैं मोटरसाइकिल का नाम भी नहीं लूंगी। पर महाराज अब अपना नाम तो बतला दो।"

"मेरा नाम है भोलू", भोलू ने बड़े गर्व से कहा। "यह आदमियों जैसा नाम है, समझ गयीं।"

"हां समझ गयी। पर तुम कौन-सा आदमियों से कम हो ? तुम भी तो उनकी तरह मोटरसाइकिल चला लेते हो। उनकी तरह ही कमीज पहनते हो। यह क्या छोटी बात है ? क्यों?" और वह फिर से खिलखिलाने लगी।

"इसमें हंसने की क्या बात है ?" भोलू को उसकी हंसी से चिढ़ होने लगी थी।

"हंसने की कोई खास तो नहीं, एक छोटी सी बात जरूर है। क्या आदमियों का सा नाम होने से ही कोई जानवर आदमी हो जाता है ?" चिड़िया अब भी हंस रही थी।

"क्या मतलब ?" भोलू की समझ में नहीं आया।

"बता सकते हो, तुम यह कमीज क्यों पहने हो ? क्या इससे लोग नहीं पहचानेंगे कि तुम आदमियों के पालतू हो ? वैसे भी यह कमीज गीली हो गयी है। पहने रहोगे तो ठंड भी लग सकती है।"

भोलू को अपनी लापरवाही पर झेंप आयी। उसने बिना बोले फौरन कमीज निकालकर फेंक दी। दोनों फिर से चुपचाप चलने लगे। तभी भोलू को

ध्यान आया कि मैंने तो इसका नाम ही नहीं पूछा। बोला, "अच्छा तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मैंने बताया था न कि हम लोग नौरंग (नवंरग) चिड़िया कहलाते हैं। पर मेरी मां ने मेरा नाम बेढंगी रख दिया था।" चिड़िया हंसते हुए कहे जा रही थी, "वह कहती थी कि मैं कोई भी काम ढंग से नहीं करती हूं। तुम देख ही रहे हो न कि मेरी बातों से तुम्हें कितना गुस्सा आ रहा है। इसी तरह मुझ से हर कोई नाराज हो जाता है।"

इस बार भोलू भी हंसे बगैर नहीं रह सका। बोला, "मैं तुम्हें बेढंगी नहीं कह सकता। मैं तुम्हें नौरंगी कहूंगा।"

"अगर वहां कोई और नौरंगी आ खड़ी हुई तो ?" चिड़िया ने मजाक में कहा।

"तो मैं तुम्हें नौरंगी दीदी कहूंगा।" फिर थोड़ा सोचकर बोला, "नौरंगी की भी क्या जरूरत है, मैं तुम्हें सिर्फ दीदी ही कहूंगा।"

इस बात ने चिड़िया को प्रसन्न कर दिया।

वे अभी कुछ ही कदम चले होंगे कि भोलू अचानक जहां का तहां थम गया। उसका हंसना बंद हो गया। वह कान खड़े करके सुनने लगा।

चिड़िया इस बीच आगे निकल गयी थी। थोड़ी देर बाद जब उसे लगा कि भोलू तो फिर कहीं पीछे छूट गया है, वह पीछे को लौटी।

"क्या हुआ भोलू", उसने घबराकर पूछा।

"सुन नहीं रही हो ?" भोलू फुसफुसाया।

"क्या ?" चिड़िया ने भी उसी तरह फुसफुसाकर पूछा।

"सुनो!" भोलू जहां का तहां खड़ा रहा, मानो जम गया हो।

चिड़िया ने सुनने की कोशिश की। पर उसकी समझ में कुछ नहीं आया। "मुझे तो कुछ सुनाई नहीं दे रहा है", अंततः चिड़िया ने हथियार डाल दिये।

"कैसी बात करती हो। सुन नहीं रही हो ? कुत्ते! कुत्ते, भौंक रहे हैं", भोलू बहुत घबराया हुआ था।

"फिर क्या हुआ ?" चिड़िया अब भी नहीं समझी। "कुत्ते तो भौंकते ही हैं। भौंकने दो। हमारा क्या कर लेंगे ?"

"तुम अगर जमीन पर चलतीं तो पता चलता कि कुत्ते क्या करते हैं। मुझे देखते ही मेरी जान के पीछे पड़ जायेंगे। समझीं?" भोलू अपनी जगह



से हिला नहीं।

चिड़िया की समझ में बात आ गयी। वह अभी सोच ही रही थी कि क्या किया जाये कि भोलू फिर फुसफुसाने लगा, "पर ये कम्बख्त कुत्ते आये कहां से ?"

चिड़िया फौरन बोली, "अरे, लगता है, कोई बस्ती नजदीक ही है।" "कौन-सी बस्ती ?" भोलू के तो छक्के ही छूट रहे थे।

"बस्ती क्या, काशीपुर शहर ही है। तुम जरा अंदर की ओर छिप कर बैठ जाओ। देखकर आती हूं। इसी झाड़ी में छिपे रहना। जब तक मैं न आ जाऊं, हिलना तक नहीं।" और चिड़िया तेजी से उस ओर को उड़ गयी, जिस ओर से कुत्तों के भौंकने की आवाज आ रही थी।

भोलू को इंतजार नहीं करना पड़ा। चिड़िया फौरन ही लौट आयी। वह बुरी तरह से हांफ रही थी। इधर भोलू स्थिति जानने के लिए बेचैन था।

"क्या हुआ ?" उसने पूछा।

चिड़िया थी कि हांफे चली जा रही थी।

"क्या हुआ आखिर ?" भोलू ने फिर पूछा।

चिड़िया ने किसी तरह कहा, "ठहरो, अभी बताती हूं।"

भोलू को एक एक क्षण भारी पड़ रहा था।

किसी तरह चिड़िया की सांस लौटी। वह बताने लगी, "काशीपुर ही है। सड़क शहर के बीच से जाती है। तुम ठीक कह रहे थे। सारे शहर में कुत्ते ही कुत्ते हैं। यही नहीं, लगता है सवेरा भी होने वाला है। आदमी लोग जागने लगे हैं। शहर के बीच में से तो हरगिज नहीं जाया जा सकता। आदमी नहीं भी उठे होते, तो भी कुत्ते तुम्हें निकलने नहीं देते। फिर वहां रोशनी भी बहुत है।"

"अब क्या होगा?" भोलू डर से कांपने लगा।

"अब हमें शहर से बचना होगा। थोड़ी दूर इस सड़क पर और जा सकते हैं। फिर सड़क छोड़ बायीं ओर को चलेंगे और घूम कर आगे निकल जायेंगे। खेतों से होते हुए। वह भी सिर्फ अंधेरे में। रास्ता मैंने देख लिया है। बीच में एक वीरान सी जगह भी है। वहां छिपा जा सकता है।"

दोपहर का भोजन

एक किलोमीटर बाद ही उन्होंने मुख्य सड़क छोड़ दी। वे शहर के बायीं ओर को चलने लगे। यह इलाका पेड़ और झाड़ियों से भरा हुआ था। शहर दूर होता जा रहा था, पर दूर दूर ही सही, बीच बीच में गांव तो थे ही। धीरे धीरे सवेरा होने लगा था। इक्के दुक्के किसान चलने फिरने भी लगे थे। भोलू को छिपकर चलने में कठिनाई हो रही थी।

अंततः भोलू को कहना पड़ा, "दीदी, देखो न कितना उजाला हो गया है। कहीं कोई देख न ले।"

चिड़िया जल्दी ही लौट आयी। बोली, "अब आगे नहीं जा सकते। बीचों बीच एक गांव है। आसपास खेत फैले हैं। वहां से निकलते हुए नजर में पड़ने का पूरा खतरा है।"

"तो क्या करें ?" भोलू फिर बेचैन हो गया।

"यहां घनी झाड़ियां हैं ही। इन्हीं में आज का दिन बितायेंगे। तुम कोई अच्छी-सी जगह तलाश कर जम जाओ। मैं पास ही किसी पेड़ पर बैठ जाऊंगी। वहीं से तुम्हारी निगरानी करती रहूंगी। पर हां, तुम मेरी सीटी याद रखना। खतरा हुआ तो मैं फौरन आवाज लगाऊंगी। समझ गये न ?"

भोलू का डर अभी भी कम नहीं हुआ था, पर वह थक बहुत गया था। चिड़िया का कहना तुरंत मान वह एक घने झुरमुट में जा बैठा। चिड़िया ने अपना मोर्चा, सबसे ऊंचे पेड़ की, सबसे ऊंची टहनी पर लगाया। वहां से उसे मीलों तक इलाका नजर आ रहा था।

चिड़िया पंख पसारकर वहीं शाख पर आराम करने लगी। थोड़ी देर में

जब थकान कम हुई तो उसे भूख सताने लगी। उसने सोचा, 'भूख तो भोलू को भी लगी होगी। मैं तो कहीं भी, कुछ भी खा सकती हूं पर समस्या भोलू की है। एक तो उसे आसानी से कुछ मिलनेवाला नहीं है, दूसरा वह कहीं जा भी नहीं सकता। हो सकता है, आसपास भोलू के लिए भी कोई जुगाड़ हो जाये।' चिड़िया ने पंख फैलाये और भोजन की तलाश में निकल पड़ी।

चिड़िया को ज्यादा चक्कर नहीं लगाने पड़े। नजदीक ही एक बाग था। उसमें आम, लीची और कटहल के कई पेड़ थे। आम, लीचियां तो बहुत छोटी थीं। कटहल भी अभी कच्चे थे, पर उनसे भोलू की भूख मिट सकती थी। चिड़िया ने ध्यान से देखा। उसे प्रसन्नता हुई, कहीं कोई नहीं था।

चिड़िया उड़ती हुई भोलू के पास पहुंची। भोलू हाथ का सिरहाना बनाकर सो रहा था। चिड़िया ने कई आवाजें लगायीं, "ओ भोलू जी! अरे भाई, भोलू जी! अरे ओ, मोटरसाइकिल वाले भोलू जी!"

पर भोलू की नींद इतनी गहरी थी कि खुल ही नहीं रही थी। अंततः चिड़िया को एक मजाक सूझा। वह उड़कर भोलू के कंधे पर जा बैठी और लगी उसके कान में चोंच से गुदगुदी करने।

पहले तो भोलू पर कोई असर ही नहीं हुआ। इस पर चिड़िया ने जोर से गुदगुदी की। भोलू ने सोये सोये ही, अचानक हाथ से चिड़िया को ऐसा झटका मारा कि वह दूर जा गिरी। वह तो कहो किस्मत अच्छी थी कि चारों ओर झाड़ियां थीं, अन्यथा मुंह फूटते देर नहीं लगती। मजाक चिड़िया को महंगा पड़ सकता था।

हारकर चिड़िया ने सोचा, 'चलो सोता है तो सोने दो।' झटका खाकर चिड़िया को अक्ल आ गयी थी। वह वापस पेड़ पर लौट आयी।

भोलू उस समय गहरी नींद में एक जबर्दस्त सपना देख रहा था।

भूख के मारे चिड़िया का बुरा हाल था। वह करवटें बदल रही थी, पर नींद का कहीं पता नहीं था। बीच बीच में वह कई बार नीचे जाकर भोलू को देख आयी थी। अब उसे जगाने की हिम्मत चिड़िया की नहीं हुई। उसे अकेले खाना भी अच्छा नहीं लग रहा था। आखिर भोलू उसके साथ आया था और वह भी भूखा था।

दोपहर हो चुकी थी। धूप तेज थी। इससे कुछ गर्मी लग रही थी। चिड़िया को अंततः हल्की झपकी सी आने लगी। तभी उसे लगा, जिस झुरमुट में भोलू

सो रहा था, वहां कुछ हलचल हुई है। चिड़िया की नींद फुर्र हो गयी। वह चौकन्नी हो गयी। उसने ध्यान से देखा, वहां सचमुच हलचल हो रही थी।

चिड़िया को लगा, हो न हो भोलू उठ गया है। वह तेजी से उड़कर वहां पहुंची। भोलू जी अंगड़ाई ले रहे थे।

चिड़िया ने व्यंग्य से पूछा, "क्यों, खूब नींद आयी ?"

भोलू हंसा, "पर अब तो बहुत भूख लग रही है।"

"खूब सोओ, भूख वूख देखी जायेगी! मैं भूख से मरी जा रही हूं। तुम हो कि सोये चले जा रहे हो। मैंने तुम्हें उठाने की कितनी कोशिश की, जानते हो ? पर तुम्हारे कान पर जूं तक नहीं रेंगी। उल्टा तुम्हारे चक्कर में मैं अपनी जान से हाथ धो बैठी थी। किस्मत थी जो बच गयी।"

"वो कैसे ?" भोलू घबराया। उसने सोचा, कहीं यह किसी सर्कस वाले के हाथ पड़ते पड़ते न बची हो।

"जब तुम आवाज लगाने से नहीं उठे तो मैंने कान के पास आकर तुम्हें उठाने की कोशिश की। उठने की जगह तुमने इतनी जोर से हाथ मारा कि मेरी गर्दन टूटते टूटते बची। अब भी दर्द हो रहा है", चिड़िया ने अपनी गर्दन मलते हुए कहा।

भोलू शर्मिंदा हो गया। वह बहुत देर तक अपनी सफाई देता रहा और माफी मांगता रहा।

चिड़िया बोली, "छोड़ो, जो हुआ सो हुआ। तुम्हारे हाथ से तो मैं बच ही गयी हूं पर लगता है भूख से मर जाऊंगी। अब मेरी बात सुनो। यहां से थोड़ी दूर पर एक बाग है। उसमें कई तरह के फल लगे हुए हैं। आसपास कोई है भी नहीं। वहां चलते हैं। तुम भी खा लेना और मैं भी। ठीक है ?"

फलों का नाम सुनते ही भोलू के मुंह में पानी आ गया। फिर उसे भूख भी जोर की लगी हुई थी। लेकिन वह यह नहीं भूला कि दोपहर का समय है और इस समय बाहर निकलना उसके लिए खतरे से खाली नहीं है। वह तुरंत बोला, "न बाबा, न! भाड़ में गये फल। मैं यहां से कहीं नहीं जाऊंगा। मुझे भूखा मरना मंजूर है, पर दोपहर में बाहर निकलना नहीं।"

"तो फिर खाओगे क्या ?" चिड़िया ने चिढ़कर कहा, "मेरा सिर?"

"ठीक है, ठीक है। मैं ऐसे ही ठीक हूं। चाहे कुछ हो जाये, मैं रात से पहले यहां से हिलने वाला नहीं। आदमियों का कोई भरोसा है, कब कहां पहुंच

जायें ?" भोलू इस तरह सिमटकर बैठ गया, मानो चिड़िया उसे गर्दन से पकड़कर जबर्दस्ती निकाल ले जायेगी।

चिड़िया समझ गयी। भोलू जरूरत से ज्यादा डरा हुआ है। संभव है, डरना सही हो। पर उसे कुछ तो खाना ही चाहिए, वरना अभी तो सारा दिन पड़ा है। कैसे कटेगा ? उसने भोलू को समझाने की कोशिश की, "मैं एक बार फिर चारों तरफ देख आती हूं। कोई खतरा नहीं होगा, तभी चलेंगे।"

पर भोलू टस से मस नहीं हुआ। बोला, "तुम खा आओ। मैं ठीक हूं।"

चिड़िया की समझ में नहीं आया कि क्या करे। अकेले खाना उसे अनुचित लग रहा था और भोलू था कि हिलने तक को तैयार नहीं था। पर वह भूखी भी कब तक रहती ? हारकर वह खाने की तलाश में निकल गयी।

इधर भोलू पेट पकड़े अंदाज लगाता रहा कि दिन डूबने में अभी और कितनी देर है। उसने हर तरह से अनुमान लगाने की कोशिश की, पर नतीजा एक ही निकला—दिन अभी बहुत बाकी है। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। तभी चिड़िया पंख फड़फड़ाती आ पहुंची।

"क्या हुआ ?" भोलू ने कुछ घबराकर पूछा।

चिड़िया बोली, "यहीं पास में बेरियों की झाड़ी है। दूर नहीं जाना पड़ेगा। वैसे कुछ ही बेर बचे हैं, पर तुम्हारा काम चल जायेगा। चलो, उठो।"

भोलू हिला तक नहीं। पड़े पड़े ही बोला, "मैंने कहा न, मुझे भूख नहीं है। तुम निश्चिंत होकर खा आओ।"

चिड़िया इस बार नाराज हो गयी। बोली, "तुम थोड़े बेवकूफ भी हो। अरे, दो कदम भी नहीं जाना है। वहां तुम्हें कोई नहीं देखेगा। क्या तुम्हें मेरी बात का विश्वास नहीं है, चलो, उठो।"

पर भोलू ने अब भी हिलने का नाम नहीं लिया। वही रट लगाये रहा कि उसे भूख नहीं है, चिड़िया खा आये।

चिड़िया की नाराजगी और बढ़ गयी। "ठीक है" उसने कहा, "मैं खाना खाने जा रही हूं। वहीं से चली जाऊंगी। अगर मुझे अकेले ही खाना है तो फिर तुम्हारा साथ देने की क्या जरूरत ?"

अब तो भोलू घबराया। चिड़िया चली गयी तो वह कहीं का नहीं रहेगा। भोलू मरे मन से उठा और चिड़िया के साथ चल पड़ा।

बेरी की झाड़ियां सच में दो कदम पर थीं। पर बेरी का मौसम खत्म



हो रहा था, इसलिए वे सूखने लगी थीं। भोलू भूख से बेहाल तो था ही उसे सूखे बेर भी अमृत लगे। जल्दी जल्दी में भोलू गुठलियां भी खा गया और जितनी फुर्ती से हो सका, अपनी जगह पर लौट आया।

थोड़ा पेट भर जाने से उसे फिर नींद आ गयी। शाम तक वह सोता ही रहा। पर नौरंग चिड़िया ने एक पल को भी झपकी नहीं ली। आखिर भोलू उसकी जिम्मेदारी थी।

भोलू का सपना

दिन छिपने से पहले ही चिड़िया ने सारे रास्ते की जांच कर ली। अंधेरा होते ही दोनों निकल पड़े। शहर से बचने के लिए उन्हें लंबा चक्कर लगाना पड़ा। फिर भी मध्य रात्रि से पहले ही वे शहर के दूसरे सिरे पर जा पहुंचे।

शहर दो किलोमीटर पीछे छूट गया था। पहाड़ की ओर जानेवाली सड़क सामने थी। चिड़िया बोली, "भोलू जी, अब हम खतरे से बाहर हैं।"

"अभी कितनी दूर और जाना है ?" भोलू ने पूछा।

"थक गये क्या ?" चिड़िया ने हंसकर कहा। इससे पहले कि भोलू कुछ कहता, चिड़िया बोली, "ज्यादा दूर नहीं होना चाहिए। यही वह सड़क है जो जंगलों से होती हुई पहाड़ों की ओर जाती है। पर रास्ते में अभी एक शहर और है। उसे पार करते ही जंगल शुरू हो जाता है।"

"एक शहर और है ?" भोलू परेशान हो गया।

"घबराओ मत, बहुत छोटा सा शहर है", चिड़िया ने उसकी हिम्मत बढ़ाने की कोशिश की।

"क्या नाम है शहर का ?" भोलू ने मरे हुए स्वर में पूछा।

"नाम है रामनगर।" चिड़िया को लगा, भोलू बेमतलब हताश हो रहा है। वह उसे निराश नहीं करना चाहती थी। बोली, "परेशानी की कोई बात नहीं। अगर थोड़ा जल्दी कदम बढ़ायेंगे तो सुबह से पहले ही हम शहर पार कर सकते हैं। वैसे अब हमें चलना भी सड़क के किनारे किनारे है, इसलिए ज्यादा मुश्किल काम नहीं है।"

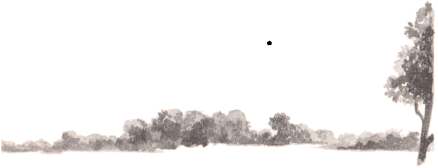
मोलू बोला, "ठीक है, मैं जल्दी जल्दी चलूंगा, चलने में मुझे कोई परेशानी नहीं है।" तभी उसे दोपहर का सपना याद आ गया। "आज मैंने एक मजेदार सपना देखा", उसने हसंते हुए कहा।

"क्या ?" चिड़िया ने पूछा।

"मैंने देखा कि मैं और तुम, साथ साथ उड़ रहे हैं। नीचे, सड़क पर रिंगमास्टर हमारे पीछे दौड़ रहा है। हम उसे दौड़ाये लिये जा रहे हैं। अंततः वह दौड़ता दौड़ता थककर गिर गया और हम उड़ते चले गये। उड़ते उड़ते हम ऐसी जगह पहुंचे, जहां पानी ही पानी है। वैसा ही जैसा तुम बता रही थीं। शायद वह समुद्र ही था। उसको पार करने के बाद हम ऐसी जगह पहुंचे, जहां हरा भरा जंगल था। जंगल तरह तरह के पशु पक्षियों से भरा हुआ था। उन्होंने हमारा खूब स्वागत सत्कार किया। और हमें वहीं अपने साथ रख लिया। वह सिर्फ पशु पक्षियों का देश था। वहां एक भी आदमी नहीं था। है न मजेदार?"

चिड़िया हंसी, "हां, सपना तो मजेदार है। अगर तुम सचमुच उड़ सकते तो कितना मजा आता। अब तक तो हम न जाने कहां से कहां पहुंच जाते।"





तभी चिड़िया को याद आया। बोली, "पर तुम उड़ कैसे रहे थे, बिना पंखों के ?"

"ठीक तुम्हारी तरह, जैसे तुम उड़ती हो। मेरे आगे के पंजे पंखों में बदल गये थे। मैं भी अपने पंखों को वैसे ही चला रहा था, जैसे तुम चलाती हो। नीचे, मुझे देख देख कर लोग आश्चर्य से चीख रहे थे— उड़ने वाला भालू, उड़ने वाला भालू , मैं शान से उड़ा चला जा रहा था। उड़ने में तो बड़ा मजा आता है। ऊपर से सब चीजें बड़ी सुंदर लगती है। क्यों ?"

"हां, उड़ने का अपना ही मजा है", चिड़िया ने कहा।

"क्या तुम मुझे उड़ना सिखा सकती हो ?" भोलू ने पूछा।

चिड़िया पहले तो उसकी बात पर हंसी, फिर बोली, "मैं तुम्हें उड़ना कैसे सिखा सकती हूं ? उड़ने के लिए पंख तो होने चाहिए न?"

"अगर मैं अपने आगे के पंजों को पंखों की तरह चलाऊं तो हो सकता है, उड़ने लगूं।"

चिड़िया चुप रही।

वह बोलता ही गया, "मैं ऐसा करता हूं, किसी ऊंचे पेड़ पर चढ़ जाता हूं। वहां से कोशिश करूं तो हो सकता है कि उड़ने लगूं। तुम्हें क्या लगता है ?"

इस बार चिड़िया से चुप नहीं रहा गया। बोली, "ओ, भई! ऐसी बेवकूफी कर मत बैठना। कोई भी प्राणी तभी उड़ पाता है जब उसके पंख होते हैं। बिना पखों के तो हम पक्षी भी हवा में नहीं कूदते।"



पहली उड़ान

चिड़िया को याद आया कि भोलू दिन में ठीक से खा नहीं पाया था। वह बताने लगी, "यहां से थोड़ी दूर ही एक बाग है। वहां तुम्हें कुछ न कुछ खाने को मिल जायेगा। तुम्हें भूख लग गयी होगी।"

भूख का नाम सुनते ही भोलू बेचैन हो गया। सपने की उड़ान भूलकर वह जमीन पर आ गया।

"बाग कितनी दूरी पर होगा ?" भोलू ने विनीत स्वर में पूछा।

"बस, पास ही है। मैं तुम्हें बता दूंगी। बाग कुछ दायीं ओर को है। सड़क पार करनी पड़ेगी। जब मैं कहूं तब करना।"

"ठीक है", भोलू ने सिर हिलाया। उसकी चाल खुद ही तेज हो गयी।

बाग सचमुच दूर नहीं था। वहां आम, लीची और भी तरह तरह के फलों वाले पेड़ थे। भोलू ने खाने में देर नहीं की। चलते समय फलों का एक बड़ा सा गुच्छा साथ भी ले लिया।

चिड़िया उसे देखकर हंसी, पर कहा कुछ नहीं।

पेट भरते ही भोलू की समझदारी भी बढ़ गयी। बोला, "अच्छा, एक बात बताओ, तुम इतनी सारी बातें कैसे जानती हो ?"

"कितनी सारी ?" चिड़िया ने हंसकर पूछा।

"यही कि यहां पर बाग है, वहां पर शहर है, वहां गांव है, पहाड़ इतनी दूर है, तुम तो बहुत ही समझदार हो।"

"लो, इसमें समझदारी की क्या बात है ? मैंने तो ये सारी चीजें कई

कई बार देखी हुई हैं। मैं तुम्हारी तरह कोई पहली बार तो आ नहीं रही हूं इधर।"

"क्या मतलब ?"

"देखो, मेरा जन्म यहीं पहाड़ों में हुआ, जहां तुम्हारा जन्म हुआ। फिर मैं अपने मां-बाप के साथ दक्षिण की ओर गयी। वहां हम बहुत दूर गये। समुद्र के पार तक। वहां पानी ही पानी था। हम उड़ते गये, उड़ते गये। तब कहीं जाकर फिर से जमीन दिखाई दी थी।"

"कितना उड़े ?"

"यही समझो, सुबह से शाम तक।"

"लगातार ? कहीं रुके ही नहीं ?"

"हां बिना रुके। वहां रुकते भी तो कहां। चारों ओर तो पानी ही पानी था।"

"तुम थके भी नहीं ? डर भी नहीं लगा ?" भोलू को आश्चर्य हुआ।

"पहली बार तो मुझे बहुत डर लगा। थकान भी हुई थी, पर मैं अकेली नहीं थी। मेरे माता-पिता ही नहीं और भी कई लोग साथ में थे। वे सब लगातार मेरा हौसला बढ़ा रहे थे। पर मैं इतनी थक गयी कि रोने ही लगी। मेरे पिताजी सोच ही रहे थे कि क्या करें, तभी उन्हें कुछ दूरी पर एक छोटा सा टापू दिखाई दिया। पिताजी मुझे उस टापू पर ले गये। बाकी चिड़ियां भी उतर गयीं। वहां मैंने थोड़ा आराम किया। वह बिल्कुल छोटा सा, नन्हा सा टापू था, जो पानी घटने से उभर आया था। शाम होने को थी और हमें जल्दी पहुंचना था। इसलिए हम फिर उड़ने लगे। उड़ते उड़ते फिर बहुत देर बाद कहीं जमीन नजर आयी। जब हम नयी जमीन पर उतरे, रात हो चुकी थी।"

चिड़िया की कहानी में भोलू को बड़ा आनंद आ रहा था। उसे आश्चर्य भी हो रहा था। आखिर ऐसी कौन सी जगह होगी, जहां पानी ही पानी होता है ? इतना पानी तो कहीं सुना ही नहीं।

"अच्छा तो तुम लोग इतना उड़ कैसे लेते हो ? सुबह से शाम तक बिना रुके ?" उसने पूछा।

"अरे, हम तो कुछ भी नहीं उड़ते। हमारी बिरादरी की और चिड़ियां तो कई कई दिन तक लगातार उड़ी चली जाती हैं, बिना रुके और बिना खाये-पिये।"



"पर कैसे ? ऐसा कैसे हो सकता है ?" भोलू को यकीन नहीं हुआ। विशेषकर भूखा रहने वाली बात उसकी समझ से बाहर थी।

"पता नहीं कैसे ? इस बारे में मैं भी कुछ ज्यादा नहीं जानती पर बात यह सच है। असल में हमारा शरीर ही ऐसा बना होता है। हम मीलों तक बिना थके उड़ सकते हैं। हमें इस बात का भी अंदाज है कि किस मौसम में हवा किस तरफ को चलती है। हवा की दिशा का हम लाभ उठाते हैं। उसमें ऐसे तैरने लगते हैं, जैसे पानी में लकड़ी। हमारा शरीर है ही इतना हल्का-फुल्का। हम सिर्फ अपना संतुलन बनाये रखते हैं। और इस तरह मीलों तक उड़ते चले जाते हैं।"

"पर तुम लोग इतना क्यों उड़ते फिरते हो ?" भोलू की समझ में नहीं आया। "क्या एक जगह चैन नहीं आता ?"

"घूमना अच्छा होता है", चिड़िया ने समझाया। "घूमने से नयी नयी जानकारी मिलती है। नयी चीजें देखने को मिलती हैं। कई तरह की चीजें खाने को मिलती हैं। एक जगह बैठे बैठे हमारा तो दम घुटने लगता है। आखिर यह दुनिया बनी किसलिए है ? देखने-सुनने के लिए ही तो न! फिर जाड़ों में यहां बहुत ठंड पड़ती है। दक्षिण का मौसम आरामदायक रहता है। हम उसका लाभ उठाते हैं।"

चिड़िया की बातें वैसे मजेदार थीं, पर भोलू को ठंड से बचने के लिए हजारों मील दूर जाना बहुत समझदारी का काम नहीं लग रहा था।

चिड़िया बोली, "लगता है रामनगर आ रहा है।"

"अच्छा!" भोलू बहुत प्रसन्न हुआ, "अब कितनी दूर होगा ?"

"बस, आया समझो। बातों बातों में कब दूरी कट गयी, पता ही नहीं चला।" चिड़िया खुश थी कि भोलू तेजी से चल रहा है।

"लगता है, हम बहुत जल्दी आ गये हैं", भोलू की प्रसन्नता का ठिकाना ही नहीं था।

"निश्चित रूप से हम जल्दी आये हैं। कल दोपहर तक तुम अपने घर के आसपास होंगे।" चिड़िया फिर बोली, "तुम कह रहे थे न कि हम लोग क्यों उड़ते-फिरते हैं ? हमें एक जगह चैन क्यों नहीं आता ? अगर मैं अपने घर से न निकली होती तो क्या तुम से मिल पाती ? मोटरसाइकिल चलाने वाले भोलू से ? फिर तुम्हें इस रास्ते की जानकारी कौन देता ? जानकारी के बिना क्या तुम सुरक्षित यहां तक पहुंच पाते ? और जानकारी तो घूमने फिरने से ही मिलती है, समझे मिस्टर भोलू!" और वह हंसने लगी।

हंसी थमने पर बोली, "फिलहाल तुम यहीं रुके रहो। मैं एक नजर देखकर आती हूं। शहर नजदीक है। अब सड़क सड़क नहीं जा सकते।"

भोलू एक झाड़ी की आड़ में बैठ गया। चिड़िया आगे निकल गयी। भोलू ने सोचा, 'अच्छा मौका है, कुछ खा ही लिया जाये।' वह फलों के गुच्छे में बचे फल खाने में लग गया। फल अभी खत्म भी नहीं हुए थे कि चिड़िया लौट आयी।

बोली, "चलो। यहां मामला आसान है, एक तो शहर छोटा है। इसलिए चक्कर लंबा नहीं होगा। दूसरे, लगता है, अभी सुबह होने में देर है। कहीं कोई जगा हुआ आदमी नहीं मिला। फटाफट चलो। सुबह से पहले ही शहर पार कर जायेंगे।"

"चलते हैं।" भोलू ने उठते हुए कहा, "मैंने तुम्हारे लिए थोड़ा फल बचाकर रखा है, उसे तो खा लो।" अब भोलू का डर थोड़ा कम हो गया था, इसलिए वह उतावली में नहीं था।

चिड़िया को भूख नहीं थी। दिन में उसने काफी खाया था। फिर भोलू का लाया कच्चा फल उसे अच्छा भी नहीं लगता था। पका हुआ होता तो और बात थी। पर भोलू का मन रखने के लिए उसने थोड़ा सा खा लिया। वे फिर से सड़क, खेतों में से होते हुए चलने लगे।

जंगल की हवा

सूरज निकलने में अभी भी देर थी। आकाश सुबह की लाली से धीरे धीरे भर रहा था। वे आखिरी शहर को भी पीछे छोड़ आये थे। जंगल शुरू हो चुका था। साथ में एक नदी थी। थोड़ी ही दूरी पर पहाड़ थे।

भोलू बहुत खुश था। चारों ओर चिड़ियां चहक रही थीं। हिरनों का एक झुंड पानी पी कर लौट रहा था। भोलू मुग्ध देखता रहा। सुबह की स्वच्छ हवा में जंगली पेड़ों की हल्की सुगंध थी। वह ऐसे वातावरण को पहली बार महसूस कर रहा था। शहरों में तो डीजल और पैट्रोल की गंध के अलावा कुछ होता ही नहीं था।

उसने पूछा, "नौरंगी दीदी, ये कौन सी नदी है ?"

"इसका नाम है कोसी", चिड़िया ने जवाब दिया। फिर बोली, "चलो, नदी में चलते हैं। तुम्हें नहाना है। परसों से तुम्हारे ऊपर ढेर सारा कीचड़ लगा हुआ है। ऐसे में तुम्हें पहचानेगा कौन।"

नहाने की बात से भोलू को खुशी नहीं हुई। पर करता भी तो क्या ? चिड़िया ने बात ही ऐसी कर दी थी। वह चुपचाप चिड़िया के पीछे चल पड़ा।

सुबह के उजाले में नदी का पानी चांदी की तरह चमक रहा था। चिड़िया ने उसे आदेश दिया, "जल्दी से नहा लो। फिर जंगल के अंदर चलेंगे।"

कुछ तो हवा ठंडी थी। पानी को देखते ही भोलू को और ज्यादा ठंड लगने लगी।

नदी में उतरने से पहले भोलू ने पानी का जायजा लेना बेहतर समझा।

उसने पानी छुआ ही था कि उसे करंट सा लगा। वह उछलकर दूर जा खड़ा हुआ।

"क्या हुआ ?" चिड़िया ने आश्चर्य से पूछा।

"बहुत ठंडा है, बाप रे, बाप! इतना ठंडा पानी। मैं कैसे नहाऊंगा ?" भोलू ने लगभग रोते हुए स्वर में कहा।

चिड़िया ने उसकी ओर देखा भी नहीं। नाक बंद की और सीधे नदी की धार में छलांग लगा दी। तीन चार गोते लगाने के बाद उसने भोलू को आवाज लगायी, "पानी बहुत अच्छा है। एक बार डुबकी लगा लोगे तो ठंड दूर भाग जायेगी। आओ, आओ तो सही।"

भोलू अभी भी झिझक रहा था। पर वह अंदर ही अंदर अपनी कायरता पर शर्मिंदा भी था। यह भी उसे मालूम था कि वह बच नहीं सकता।

चिड़िया ने फिर आवाज लगायी, "इस तरह डरने से काम नहीं चलेगा। आओ। जल्दी आओ।"



अंततः भोलू कूद ही पड़ा। उसकी पूरी कोशिश थी कि एक गोता लगाकर भाग ले, पर चिड़िया भी पूरी उस्ताद थी। उसने भालू को देर तक निकलने नहीं दिया। जैसे ही वह निकलने को होता, चिड़िया फौरन कहती, "अभी तुम्हारे कानों में मैल है, ठीक से साफ करो।" फिर कहती, "जरा पीठ पर तो हाथ मारो, मिट्टी लगी रह गयी है।" जब तक उसकी पीठ साफ हो पाती, चिड़िया बोल उठती, "आये-हाये। गर्दन तो देखो। और हां, जरा हाथ-पैर भी साफ कर लो। एक पत्थर से रगड़ लो। कितनी तो मोटी मैल की तह जमी है। लोग भी क्या कहेंगे ?"

इस तरह उसे जम कर नहाना पड़ा। जब वह बाहर निकला तो ठंड से कांप रहा था।



घर की ओर

जंगल में प्रवेश करने के बाद चिड़िया ने भोलू से कहा, "जो जानकारी तुमने मुझे दी थी, उसके मुताबिक मैं तुम्हें ले आयी हूं। अपना घर अब तुम्हें खुद ढूंढना है। मुझे अपने भी काम करने हैं। मेरे बच्चे पीछे आ रहे हैं। वे जल्दी पहुंचने वाले होंगे। उनके लिए रहने की जगह तुरंत तलाश करनी है।"

भोलू उसकी बात सुनकर उदास हो गया। उसने कोई जवाब नहीं दिया।

जब भोलू देर तक कुछ नहीं बोला तो चिड़िया ने दिलासा देते हुए कहा, "घबराओ मत। मैं तुम्हें ऐसे ही नहीं छोडूंगी। यहां पास ही एक बूढ़ा भालू रहता है। मैं तुम्हें उससे मिला देती हूं। वह बहुत अच्छा प्राणी है। सबकी मदद करता है। तुम्हें घर पहुंचाने में वह मुझसे ज्यादा मददगार साबित होगा।"

बूढ़े भालू का घर नजदीक ही था। पहुंचने में देर नहीं लगी।

चिड़िया भोलू को पहाड़ के बीच में बनी एक गुफा में ले गयी। बूढ़ा भालू बाहर ही बैठा जम्हाइयां ले रहा था।

चिड़िया ने कहा, "काका राम-राम। मुझे पहचाना, मैं हूं बेढंगी।"

"अरे, आ गई तू। इस बार तो मुझे लगता है कुछ जल्दी आ गयी है। कैसी रही तेरी यात्रा ?" बूढ़े भालू ने पूछा।

"बहुत बढ़िया। असल में इस बार उधर गर्मी कुछ जल्दी ही पड़ने लगी थी। इसलिए चली आयी। आप तो जानते ही हैं। मुझे पहाड़ों की बड़ी याद आती है।"

"क्यों नहीं। आखिर तेरी जन्मभूमि है।" बूढ़े भालू ने सहमति जताते



हुए पूछा, "पर बाकी लोग कहां हैं ?"

"आ रहे हैं, पीछे पीछे आ रहे हैं। मैं तब तक रहने-खाने का प्रबंध करूंगी।"

"चलो, अच्छा हुआ, तू आ गयी। अब तेरा गाना तो सुनने को मिलेगा।"

"मैं अपने साथ एक दोस्त को भी लायी हूं", चिड़िया ने पीछे खड़े भोलू की ओर इशारा करते हुए कहा।

"कहां ?" बूढ़े भालू को एकाएक कुछ नजर नहीं आया। भोलू के दो कदम आगे आने पर वह माफी मांगता हुआ बोला, "अरे भई, माफ करना। मैं बूढ़ा हो गया हूं न, इसलिए जरा कम दिखाई देने लगा है। तुम तो भालू लगते हो, क्यों ?"

"लगता नहीं है, काका, यह भालू ही है। बड़ा करतबी है। आदमियों की तरह मोटरसाइकिल चलाता है", चिड़िया ने उसकी भरपूर तारीफ की।

"पर तुझे यह मिला कहां ?" बूढ़े ने पूछा।

"मिलता कहां, सड़क पर बैठा रो रहा था।" फिर सारी कहानी सुनाने के बाद बोली, "काका, आप किसी भालू परिवार को जानते हैं, जिनका बच्चा खो गया हो ? इसे तो कुछ याद नहीं है। तब यह बहुत छोटा रहा होगा। मां-बाप का नाम भी नहीं पता इसे।" उसके स्वर में चिंता थी।

"हां, मुझे याद आ रहा है। कोई एक डेढ़ वर्ष पहले, भालू का एक जोड़ा अपना बच्चा खोजता हुआ यहां आया था। यहां से पश्चिम की ओर कहीं उनका घर था। कह रहे थे, ज्यादा दूर नहीं है", बूढ़े भालू ने याद करते हुए कहा।

"पता तो चल जायेगा न ?" चिड़िया ने बेचैन होकर पूछा।

"हां, हां चल जायेगा। भला पता क्यों नहीं चलेगा ? मेरे बेटे किस काम के हैं। वो सारा जंगल छान मारेंगे। चाहे कुछ हो जाये, इसके माता-पिता को हम खोज निकालेंगे। आ जा बेटा। यहां बैठ जा। इसे अपना ही घर समझ", कहकर उन्होंने भोलू को अपने पास बिठा लिया। वे कहते गये, "तुझे तेरे घर पहुंचाना अब हमारी जिम्मेदारी है। यह बेढंगी बहुत ही समझदार और दयालु चिड़िया है। इसने तो बहुत बड़ा काम कर दिया है।" फिर बेढंगी से बोले, "जा बेटा, अब तू अपना काम देख। तेरा परिवार आ रहा है। इसके बारे में अब तू बिल्कुल चिंता न कर। तेरी जिम्मेदारी अब खत्म।"

चिड़िया ने भोलू से विदाई लेते हुए कहा, "भोलू, अब तुम सही जगह आ गये हो। काका तुम्हें तुम्हारे माता-पिता के पास पहुंचा देंगे। मैं भी आसपास ही रहूंगी। जब कभी समय मिलेगा, तुमसे मिलने अवश्य आऊंगी। अब मैं जा रही हूं। कोई काम हो तो बोलो ?"

भोलू थोड़ा झिझका। बोलूं या न बोलूं, वह निर्णय नहीं कर पा रहा था।

चिड़िया समझ गयी कि इसके मन में कुछ है। बोली, "बताओ, झिझक क्यों रहे हो ? बोलो, क्या बात है ? अगर हम एक दूसरे के काम ही न आये तो फिर हमारे होने का क्या फायदा ? तुम बेझिझक बोलो।"

बहुत देर तक भोलू से कुछ बोला ही नहीं गया। अंततः जब वह बोला, उसके होंठ कांप रहे थे। गला भर आया था। किसी तरह उसने कहा, "जब तुम लौटो, क्या मेरे दोस्त से कह दोगी कि मैं सकुशल अपने घर पहुंच गया हूं ?" बात पूरी होते होते उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।

"तुम्हारा मतलब उस सर्कस वाले लड़के से है ?" चिड़िया ने पूछा।

भोलू ने हां में सिर हिलाया। उससे बोला नहीं जा रहा था।

चिड़िया आकर उसके कंधे पर बैठ गयी। बोली, "रोओ मत। हम तो बहुत दिनों के बाद लौटेंगे। गर्मियों के मौसम के बाद। तब तक तुम्हारा सर्कस न जाने कहां निकल जायेगा। तुम घबराओ मत। मैं दो एक दिन में ही अपना काम खत्म कर दूंगी। तब तक मेरे बच्चे भी आ जायेंगे। फिर मैं खाली ही हूं। तुरंत जाकर तुम्हारे दोस्त को बता आऊंगी कि तुम अपने घर पहुंच गये हो। यह मेरा वायदा है।"

चिड़िया ने उसका कंधा थपथपाया और उड़ गयी।

भोलू डबडबाई आंखों से उसे तब तक देखता रहा, जब तक वह ओझल नहीं हो गयी।

मुद्रक : कपूर आर्ट प्रेस, ए ३८/३ मायापुरी फेज़ १, नई दिल्ली ११००६४

रु. 12.00

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

